CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2014 with Solution PDF-Set 2/2/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 6, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. विषमता शोषण की जननी है । समाज में जितनी विषमता होगी, सामान्यतया शोषण उतना ही अधिक होगा । चूँकि हमारे देश में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक असमानताएँ अधिक हैं जिसकी वज़ह से एक व्यक्ति एक स्थान पर शोषक तथा वही दूसरे स्थान पर शोषित होता है । चूँकि जब बात उपभोक्ता संरक्षण की हो तब पहला प्रश्न यह उठता है कि उपभोक्ता किसे कहते हैं ? या उपभोक्ता की परिभाषा क्या है ? सामान्यतः उस व्यक्ति या व्यक्ति समूह को उपभोक्ता कहा जाता है जो सीधे तौर पर किन्हीं भी वस्तुओं अथवा सेवाओं का उपयोग करते हैं । इस प्रकार सभी व्यक्ति किसी-न-किसी रूप में शोषण का शिकार अवश्य होते हैं ।

हमारे देश में ऐसे अशिक्षित, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से दुर्बल अशक्त लोगों की भीड़ है जो शहर की मलिन बस्तियों में, फुटपाथ पर, सड़क तथा रेलवे लाइन के किनारे, गंदे नालों के किनारे झोपड़ी डालकर अथवा किसी भी अन्य तरह से अपना जीवन-यापन कर रहे हैं । वे दुनिया के सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देश की समाजोपयोगी ऊर्ध्वमुखी योजनाओं से वंचित हैं, जिन्हें आधुनिक सफ़ेदपोशों, व्यापारियों, नौकरशाहों एवं तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग ने मिलकर बाँट लिया है । सही मायने में शोषण इन्हीं की देन है ।

उपभोक्ता शोषण का तात्पर्य केवल उत्पादकता व व्यापारियों द्वारा किए गए शोषण से ही लिया जाता है जबकि इसके क्षेत्र में वस्तुएँ एवं सेवाएँ दोनों ही सम्मिलित हैं, जिनके अन्तर्गत डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी, वकील सभी आते हैं । इन सबने शोषण के क्षेत्र में जो कीर्तिमान बनाए हैं वे वास्तव में गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज़ कराने लायक हैं ।

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [15 अंक]

1(क). गद्यांश का समुचित शीर्षक लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर गद्यांश के कथ्य और संदर्भ के अनुसार देना है।
- मुख्य बात पहचानकर उसे स्पष्ट और संक्षिप्त हिंदी में प्रस्तुत करना है।

चरण 1: गद्यांश के केंद्रीय विषय को पहचानना गद्यांश में सामाजिक विषमता और उससे पैदा होने वाले शोषण की चर्चा है। आगे उपभोक्ता की परिभाषा, दुर्बल वर्ग की दशा तथा वस्तुओं और सेवाओं के क्षेत्र में होने वाले शोषण को समझाया गया है। इसलिए शीर्षक में उपभोक्ता और शोषण, दोनों का संकेत होना चाहिए।

चरण 2: शीर्षक को पूरे गद्यांश से मिलाना केवल गरीबी अथवा सामाजिक योजनाएँ शीर्षक रखने से विषय का एक ही पक्ष सामने आएगा। उपभोक्ता शोषण ऐसा संक्षिप्त शीर्षक है जो व्यापारियों के साथ सेवाएँ देने वाले वर्गों की चर्चा को भी समेट लेता है। यह गद्यांश की केंद्रीय चिंता को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष समुचित शीर्षक है—उपभोक्ता शोषण।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय उपभोक्ता और शोषण, दोनों केंद्रीय शब्द रखें ताकि वस्तु तथा सेवा, दोनों क्षेत्र समा जाएँ।

1(ख). 'विषमता' शब्द से मूल शब्द तथा प्रत्यय छाँटकर लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर गद्यांश के कथ्य और संदर्भ के अनुसार देना है।
- मुख्य बात पहचानकर उसे स्पष्ट और संक्षिप्त हिंदी में प्रस्तुत करना है।

चरण 1: शब्द का अर्थ और रचना पहचानना विषमता का अर्थ असमानता है। इस शब्द में विषम किसी वस्तु या स्थिति के असमान होने का गुण बताता है। इसी आधार शब्द से उस गुण का भाव प्रकट करने वाला संज्ञा शब्द बनाया गया है। शब्द-विभाजन करते समय अर्थपूर्ण आधार को सुरक्षित रखना आवश्यक है।

चरण 2: भाववाचक प्रत्यय अलग करना विषम में ता जोड़ने से विषमता बनता है। यहाँ ता प्रत्यय गुण के भाव को व्यक्त करता है। अतः विषमता को विषम और ता में बाँटेंगे। मता अथवा अता को प्रत्यय मानना ठीक नहीं होगा, क्योंकि इससे आधार शब्द विषम की सही पहचान नहीं रहती।

चरण 3: निष्कर्ष मूल शब्द: विषम; प्रत्यय: ता।

त्वरित सुझाव: विषम में भाववाचक ता प्रत्यय जोड़कर विषमता बनता है; आधार शब्द के अंतिम म को मूल शब्द में ही रखें।

1(ग). 'ऊर्ध्वमुखी योजनाओं से वंचित है' – वाक्य का आशय समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर गद्यांश के कथ्य और संदर्भ के अनुसार देना है।
- मुख्य बात पहचानकर उसे स्पष्ट और संक्षिप्त हिंदी में प्रस्तुत करना है।

चरण 1: प्रसंग के आधार पर शब्द का अर्थ समझना ऊर्ध्वमुखी का अर्थ ऊपर की ओर बढ़ने वाली है। यहाँ इसका प्रयोग ऐसी समाजोपयोगी योजनाओं के लिए हुआ है जिनका उद्देश्य समाज का उत्थान करना और जीवन-स्तर सुधारना है। वंचित रहने का अर्थ इन योजनाओं से मिलने वाले लाभों से दूर रह जाना है। गद्यांश में यह बात अशिक्षित और सामाजिक-आर्थिक रूप से दुर्बल लोगों के संदर्भ में कही गई है।

चरण 2: वंचित रहने का कारण जोड़ना ये लोग मलिन बस्तियों, फुटपाथों तथा सड़क या रेलवे लाइन के किनारे कठिन परिस्थितियों में जीवन बिताते हैं। उनके उत्थान के लिए बनी योजनाओं का लाभ उन्हें नहीं मिल पाता। लेखक के अनुसार आधुनिक सफ़ेदपोशों, व्यापारियों, नौकरशाहों और तथाकथित बुद्धिजीवियों ने योजनाओं के लाभ आपस में बाँट लिए हैं। परिणामत: जिन लोगों के जीवन में सुधार होना चाहिए था, वे अभाव में बने रहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन का आशय है कि समाज के उत्थान के लिए बनी योजनाओं के लाभ से दुर्बल और अशिक्षित लोग वंचित रह जाते हैं, क्योंकि प्रभावशाली वर्ग उन लाभों को आपस में बाँट लेता है।

त्वरित सुझाव: ऊर्ध्वमुखी का अर्थ उत्थानकारी समझें और उत्तर में योजनाओं से वंचित रहने वाले दुर्बल लोगों का उल्लेख करें।

1(घ). 'विषमता शोषण की जननी है' – कैसे ? स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर गद्यांश के कथ्य और संदर्भ के अनुसार देना है।
- मुख्य बात पहचानकर उसे स्पष्ट और संक्षिप्त हिंदी में प्रस्तुत करना है।

चरण 1: गद्यांश का केंद्रीय तर्क समझना लेखक ने आरंभ में कहा है कि विषमता शोषण की जननी है। समाज में आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक असमानता के कारण सभी लोगों की स्थिति और सामर्थ्य समान नहीं होती। कुछ लोग अधिक समर्थ होते हैं, जबकि दूसरे दुर्बल और अशक्त रह जाते हैं। यह असमान संबंध शोषण की गुंजाइश बढ़ाता है।

चरण 2: शोषण की प्रक्रिया स्पष्ट करना साधन-संपन्न और प्रभावशाली लोग दुर्बल लोगों की स्थिति का लाभ उठाकर उनके अधिकारों और सुविधाओं को अपने हाथ में ले लेते हैं। समाजोपयोगी योजनाओं का लाभ प्रभावशाली वर्ग द्वारा बाँट लेना इसी का उदाहरण है। गद्यांश यह भी बताता है कि एक व्यक्ति किसी स्थान पर शोषक और दूसरे स्थान पर शोषित हो सकता है। इसलिए विषमता जितनी अधिक होगी, सामान्यत: शोषण भी उतना अधिक होगा।

चरण 3: निष्कर्ष विषमता लोगों को समर्थ और दुर्बल वर्गों में बाँटती है। समर्थ वर्ग दुर्बल वर्ग की विवशता का लाभ उठाता है; इसी कारण विषमता को शोषण की जननी कहा गया है।

त्वरित सुझाव: विषमता से असमान सामर्थ्य और उससे दुर्बल वर्ग का शोषण होने तक का कारण-संबंध स्पष्ट करके लिखें।

1(ङ). समाज में जितनी विषमता होगी, सामान्यतः शोषण उतना ही अधिक होगा । वाक्य-भेद लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर गद्यांश के कथ्य और संदर्भ के अनुसार देना है।
- मुख्य बात पहचानकर उसे स्पष्ट और संक्षिप्त हिंदी में प्रस्तुत करना है।

चरण 1: उपवाक्यों का संबंध पहचानना वाक्य में जितनी विषमता होगी और शोषण उतना ही अधिक होगा, दो उपवाक्य हैं। जितनी वाला अंश दूसरे अंश से संबंधित होकर अर्थ पूरा करता है। यहाँ दोनों कथनों को स्वतंत्र रूप से जोड़ने के बजाय एक कथन दूसरे की मात्रा या सीमा बताता है।

चरण 2: रचना के आधार पर वर्गीकरण करना जितनी वाला आश्रित उपवाक्य उतना वाले प्रधान उपवाक्य से जुड़ा है। प्रधान तथा आश्रित उपवाक्य की उपस्थिति मिश्र वाक्य की पहचान है। अतः इसे सरल वाक्य नहीं कहा जाएगा; इसमें केवल एक उपवाक्य नहीं है। यह संयुक्त वाक्य भी नहीं है, क्योंकि दोनों उपवाक्य समान स्तर पर स्वतंत्र नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष रचना के आधार पर यह मिश्र वाक्य है।

त्वरित सुझाव: जितनी और उतना को देखकर आश्रित तथा प्रधान उपवाक्य पहचानें; इनके मेल के कारण मिश्र वाक्य लिखें।

1(च). उपभोक्ता शोषण से क्या आशय है ? इसकी सीमाएँ कहाँ तक हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर गद्यांश के कथ्य और संदर्भ के अनुसार देना है।
- मुख्य बात पहचानकर उसे स्पष्ट और संक्षिप्त हिंदी में प्रस्तुत करना है।

चरण 1: शोषण का आशय स्पष्ट करना गद्यांश के अनुसार उपभोक्ता वह व्यक्ति या समूह है जो सीधे वस्तुओं अथवा सेवाओं का उपयोग करता है। ऐसे उपयोगकर्ताओं का अनुचित लाभ उठाना उपभोक्ता शोषण है। लेखक इस बात पर ध्यान दिलाता है कि प्रचलित समझ में इसका दोष केवल उत्पादकों और व्यापारियों पर रखा जाता है। इस संकीर्ण अर्थ से शोषण का पूरा क्षेत्र सामने नहीं आता।

चरण 2: शोषण के क्षेत्र की सीमा बताना उपभोक्ता शोषण का क्षेत्र वस्तुओं और सेवाओं, दोनों तक फैला है। इसलिए केवल वस्तु बनाने या बेचने वाले लोग ही इसके अंतर्गत नहीं आते। डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी और वकील जैसे सेवा प्रदान करने वाले लोग भी उपभोक्ता का शोषण कर सकते हैं। गद्यांश इन्हीं उदाहरणों से स्पष्ट करता है कि सेवाएँ लेने वाला व्यक्ति भी उपभोक्ता है और उसके साथ होने वाला अन्याय भी उपभोक्ता शोषण का हिस्सा है।

चरण 3: निष्कर्ष वस्तुओं या सेवाओं का उपयोग करने वाले व्यक्ति का अनुचित लाभ उठाना उपभोक्ता शोषण है। इसकी सीमाएँ उत्पादन और व्यापार से आगे डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी तथा वकील द्वारा दी जाने वाली सेवाओं तक फैली हैं।

त्वरित सुझाव: शोषण का क्षेत्र बताते समय वस्तुओं के साथ सेवाएँ लिखें और डॉक्टर या शिक्षक का उदाहरण अवश्य जोड़ें।

1(छ). देश की समाजोपयोगी योजनाओं से कौन-सा वर्ग वंचित रह जाता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर गद्यांश के कथ्य और संदर्भ के अनुसार देना है।
- मुख्य बात पहचानकर उसे स्पष्ट और संक्षिप्त हिंदी में प्रस्तुत करना है।

चरण 1: वंचित लोगों की पहचान करना गद्यांश में उन लोगों का उल्लेख है जो अशिक्षित तथा सामाजिक और आर्थिक रूप से दुर्बल-अशक्त हैं। वे शहरों की मलिन बस्तियों, फुटपाथों, सड़कों और रेलवे लाइन के किनारे अथवा गंदे नालों के पास झोपड़ी बनाकर जीवन बिताते हैं। लेखक के अनुसार यही अभावग्रस्त वर्ग देश की समाजोपयोगी योजनाओं के लाभों से वंचित रह जाता है।

चरण 2: वंचना का कारण गद्यांश से बताना लेखक ने इसका कारण प्रभावशाली लोगों द्वारा योजनाओं के लाभों को आपस में बाँट लेना बताया है। आधुनिक सफ़ेदपोश, व्यापारी, नौकरशाह तथा तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग इस लाभ-वितरण पर अधिकार कर लेते हैं। परिणामतः जिन दुर्बल लोगों के जीवन को ऊपर उठाने के लिए योजनाएँ बनी हैं, उन तक उनका लाभ नहीं पहुँचता। उत्तर में केवल गरीबी कहना अधूरा है; गद्यांश में बताए गए लाभों के हड़प लिए जाने का कारण भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष अशिक्षित, सामाजिक और आर्थिक रूप से दुर्बल-अशक्त वर्ग योजनाओं से वंचित रह जाता है, क्योंकि प्रभावशाली सफ़ेदपोश, व्यापारी, नौकरशाह और तथाकथित बुद्धिजीवी उनके लाभ आपस में बाँट लेते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में वंचित दुर्बल वर्ग के साथ योजनाओं का लाभ आपस में बाँटने वाले प्रभावशाली वर्ग का भी नाम दें।

1(ज). उपभोक्ता किसे कहते हैं ? उपभोक्ता शोषण का मुख्य कारण क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर गद्यांश के कथ्य और संदर्भ के अनुसार देना है।
- मुख्य बात पहचानकर उसे स्पष्ट और संक्षिप्त हिंदी में प्रस्तुत करना है।

चरण 1: उपभोक्ता शब्द का अर्थ बताना गद्यांश में उपभोक्ता की स्पष्ट परिभाषा दी गई है। जो व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का समूह सीधे तौर पर किसी वस्तु या सेवा का उपयोग करता है, उसे उपभोक्ता कहते हैं। इस परिभाषा में वस्तु के साथ सेवा का उपयोग भी शामिल है। अतः उपभोक्ता की पहचान को केवल बाजार में वस्तु खरीदने वाले तक सीमित रखना उचित नहीं होगा।

चरण 2: शोषण का मुख्य कारण पहचानना लेखक ने सामाजिक विषमता को शोषण की जननी कहा है। हमारे देश की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक असमानताएँ लोगों को असमान स्थितियों में रखती हैं। इससे एक व्यक्ति किसी स्थान पर शोषक तथा दूसरे स्थान पर शोषित बन जाता है। इसलिए गद्यांश के अनुसार उपभोक्ता शोषण का मुख्य कारण यही विषमता है। इसे केवल व्यापारियों की भूमिका तक सीमित करने से लेखक का मूल तर्क छूट जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष वस्तुओं अथवा सेवाओं का सीधे उपयोग करने वाला व्यक्ति या व्यक्ति-समूह उपभोक्ता है। उपभोक्ता शोषण का मुख्य कारण सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक विषमता है।

त्वरित सुझाव: उपभोक्ता की परिभाषा में वस्तु और सेवा दोनों रखें तथा शोषण के मुख्य कारण में विषमता स्पष्ट लिखें।

1(झ). सामान्यतः शोषण का दोषी किसे कहा जाता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर गद्यांश के कथ्य और संदर्भ के अनुसार देना है।
- मुख्य बात पहचानकर उसे स्पष्ट और संक्षिप्त हिंदी में प्रस्तुत करना है।

चरण 1: सामान्य धारणा पहचानना गद्यांश कहता है कि उपभोक्ता शोषण का तात्पर्य सामान्यतः केवल उत्पादकों और व्यापारियों द्वारा किए गए शोषण से लिया जाता है। इसलिए सामान्य धारणा में इन्हीं को शोषण का दोषी माना जाता है। प्रश्न में सामान्यतः शब्द इसी प्रचलित समझ की ओर संकेत करता है। उत्तर का पहला भाग इस धारणा को स्पष्ट करना है।

चरण 2: कारण तथा लेखक का व्यापक दृष्टिकोण बताना उत्पादक वस्तुएँ तैयार करते हैं और व्यापारी उन्हें उपभोक्ता तक पहुँचाते हैं। वस्तुओं के उत्पादन और व्यापार से सीधे जुड़े होने के कारण उपभोक्ता के शोषण का दोष सामान्यतः इन्हीं पर लगाया जाता है। फिर भी लेखक के अनुसार यह समझ अधूरी है, क्योंकि उपभोक्ता वस्तुओं के साथ सेवाओं का भी उपयोग करता है। डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी तथा वकील जैसे सेवा-प्रदाता भी शोषण के क्षेत्र में आते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सामान्यतः उत्पादकों और व्यापारियों को दोषी माना जाता है, क्योंकि उपभोक्ता शोषण को प्रायः वस्तुओं के उत्पादन और व्यापार में होने वाले शोषण तक सीमित समझ लिया जाता है।

त्वरित सुझाव: सामान्यतः शब्द पर ध्यान दें: पहले उत्पादक-व्यापारी लिखें, फिर वस्तुओं तक सीमित समझ का कारण बताएँ।

---

2. आँसू से भाग्य पसीजा है, हे मित्र, कहाँ इस जग में ?
नित यहाँ शक्ति के आगे, दीपक जलते मग-मग में ।
कुछ तनिक ध्यान से सोचो, धरती किसकी हो पाई ?
बोलो युग-युग तक किसने, किसकी विरुदावलि गाई ?
मधुमास मधुर रुचिकर है, पर पतझर भी आता है ।
जग रंगमंच का अभिनय, जो आता सो जाता है ।
सचमुच वह ही जीवित है, जिसमें कुछ बल-विक्रम है ।
पल-पल घुड़दौड़ यहाँ है, बल-पौरुष का संगम है
दुर्बल को सहज मिटाकर, चुपचाप समय खा जाता,
वीरों के ही गीतों को, इतिहास सदा दोहराता ।
फिर क्या विषाद, भय चिंता जो होगा सब सह लेंगे,
परिवर्तन की लहरों में जैसे होगा बह लेंगे ।
नीचे लिखे अपठित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [5 अंक]

2(क). कविता का मूल सन्देश क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता का केंद्रीय संदेश उसके समग्र भाव से निकाला जाता है।
- यह काव्यांश साहस, पुरुषार्थ और परिवर्तन को स्वीकार करने की प्रेरणा देता है।

चरण 1: आरंभिक कथन समझें कवि पूछता है कि आँसू बहाने से संसार में किसका भाग्य बदला है। शक्ति के आगे दीप जलने का उल्लेख बताता है कि केवल दुख प्रकट करने के बजाय अपनी सामर्थ्य बढ़ानी चाहिए।

चरण 2: अंतिम पंक्तियों से संदेश जोड़ें कवि विषाद, भय और चिंता छोड़कर आने वाली परिस्थितियों को सहने के लिए कहता है। परिवर्तन की लहरों में आगे बढ़ने का आशय परिस्थिति के अनुसार स्वयं को ढालते हुए साहस बनाए रखना है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का मूल संदेश है कि मनुष्य रोने और चिंता करने के बजाय साहस तथा पुरुषार्थ से कठिनाइयों का सामना करे और जीवन के परिवर्तनों को धैर्यपूर्वक स्वीकार करे।

त्वरित सुझाव: मूल संदेश लिखते समय कविता के आरंभ और अंत के साझा भाव को एक संक्षिप्त उत्तर में जोड़ें।

2(ख). 'रोने से दुर्भाग्य सौभाग्य में नहीं बदल जाता' के भाव की पंक्तियाँ छाँटकर लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में दिए भाव से मेल खाने वाली मूल पंक्ति ही उद्धृत करनी चाहिए।
- आँसू से भाग्य न पसीजने का कथन रोने की निष्फलता स्पष्ट करता है।

चरण 1: भाव के मुख्य शब्द पहचानें प्रश्न में रोने से दुर्भाग्य न बदलने का भाव है। इसलिए काव्यांश में आँसू और भाग्य से संबंधित कथन खोजना चाहिए। कवि का प्रश्नवाचक कथन इसी विचार को व्यक्त करता है।

चरण 2: उद्धरण की उपयुक्तता जाँचें पहली पंक्ति पूछती है कि संसार में कहाँ आँसुओं से भाग्य पसीजा है। इसका निहित उत्तर है कि कहीं नहीं। अतः यही पंक्ति प्रश्न के भाव का सटीक प्रमाण है; अन्य पंक्तियाँ शक्ति और वीरता की चर्चा करती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संबंधित पंक्ति है :

आँसू से भाग्य पसीजा है, हे मित्र, कहाँ इस जग में ?

त्वरित सुझाव: पंक्ति छाँटने वाले प्रश्न में अपनी व्याख्या के स्थान पर दिए हुए काव्यांश के शब्द ज्यों के त्यों लिखें।

2(ग). समय किसे नष्ट कर देता है और कैसे ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के दोनों पक्षों, किसे और कैसे, का उत्तर देना आवश्यक है।
- दुर्बल के विनाश का संकेत काव्यांश की समय संबंधी पंक्ति में है।

चरण 1: किसे नष्ट किया जाता है कवि कहता है, दुर्बल को सहज मिटाकर। यहाँ दुर्बल वह है जिसमें जीवन के संघर्ष का सामना करने का बल और साहस नहीं है। प्रश्न का पहला उत्तर इसी शब्द से स्पष्ट हो जाता है।

चरण 2: नष्ट होने का ढंग समझें चुपचाप समय खा जाता का अर्थ है कि समय ऐसे दुर्बल व्यक्ति को बिना किसी शोर या विशेष प्रयास के समाप्त कर देता है। यह समय की निरंतर गति और संघर्ष में निष्क्रिय रहने के परिणाम का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष समय दुर्बल व्यक्ति को सहज ही, चुपचाप मिटाकर नष्ट कर देता है।

त्वरित सुझाव: किसे और कैसे पूछे जाने पर उत्तर में दुर्बल तथा सहज ही चुपचाप, दोनों बातें स्पष्ट रखें।

2(घ). इतिहास किसे याद रखता है और क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में इतिहास की स्मृति को वीरों के गीतों से जोड़ा गया है।
- कारण बताते समय वीरता और पराक्रम का उल्लेख करना चाहिए।

चरण 1: संबंधित कथन खोजें वीरों के ही गीतों को, इतिहास सदा दोहराता पंक्ति बताती है कि इतिहास वीर व्यक्तियों को याद रखता है। उत्तर में व्यक्ति की पहचान इसी पंक्ति के आधार पर करनी चाहिए।

चरण 2: याद रखे जाने का कारण समझें कविता बल-विक्रम और पुरुषार्थ को जीवन की सार्थकता मानती है। वीर लोग अपने साहस और पराक्रम से कठिन परिस्थितियों का सामना करते हैं। उनके ऐसे कर्म स्मरणीय बनते हैं और इतिहास उन्हें बार-बार दोहराता है।

चरण 3: निष्कर्ष इतिहास वीरों को याद रखता है, क्योंकि उनके साहस, पराक्रम और पुरुषार्थपूर्ण कार्य स्मरणीय होते हैं।

त्वरित सुझाव: कारण वाले उत्तर में केवल पंक्ति न दोहराएँ; वीरों के साहस और पराक्रम को स्मरण का कारण बनाएँ।

2(ङ). 'मधुमास मधुर रुचिकर है, पर पतझर भी आता है' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ में प्राकृतिक चित्र के पीछे निहित जीवन-संदेश स्पष्ट किया जाता है।
- मधुमास सुखद समय और पतझर कठिन समय का प्रतीक है।

चरण 1: प्रतीकों का अर्थ समझें मधुमास अर्थात वसंत ऋतु सुंदर और आनंददायक होती है, जबकि पतझर में पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं। कवि इन दोनों ऋतुओं के माध्यम से जीवन की बदलती परिस्थितियों की ओर संकेत करता है।

चरण 2: जीवन से संबंध जोड़ें जिस प्रकार केवल वसंत सदा नहीं रहता और पतझर भी आता है, उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में सुख के साथ दुख भी आते हैं। इसलिए सुख को स्थायी मानकर निश्चिंत नहीं होना चाहिए और कठिन समय में धैर्य रखना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का भाव है कि जीवन में सुख और दुख दोनों आते हैं। सुखद परिस्थितियाँ सदा नहीं रहतीं; अतः मनुष्य को परिवर्तन स्वीकार कर कठिन समय का सामना धैर्य से करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: भावार्थ लिखते समय मधुमास और पतझर को क्रमशः सुख तथा दुख से जोड़कर जीवन का संदेश स्पष्ट करें।

3(क). नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

अंतरिक्ष में भारत के कदम [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और उपसंहार होना चाहिए।
- वैज्ञानिक उपलब्धियों के साथ उनके सामाजिक उपयोग और आत्मनिर्भरता का महत्व स्पष्ट करें।

चरण 1: रूपरेखा बनाएँ भूमिका में अंतरिक्ष अनुसंधान का महत्व बताएँ। इसके बाद भारतीय प्रयासों का आरंभ, प्रमुख उपलब्धियाँ, सामान्य जीवन में उपयोग और भविष्य की दिशा रखें। अंत में विज्ञान को मानव-कल्याण से जोड़ते हुए निष्कर्ष दें।

चरण 2: तथ्यों और भाषा का चयन करें आर्यभट्ट, इसरो, प्रक्षेपण यान और चंद्रयान जैसी स्थापित उपलब्धियाँ लें। उपलब्धियों की केवल सूची बनाने के बजाय बताएँ कि संचार, मौसम, कृषि और आपदा प्रबंधन को उनसे क्या लाभ होता है। भाषा सरल और विषय-केंद्रित रखें।

चरण 3: पूर्ण निबंध अंतरिक्ष में भारत के कदम

अनंत आकाश मनुष्य की जिज्ञासा को सदा आकर्षित करता रहा है। विज्ञान ने इस जिज्ञासा को अंतरिक्ष अनुसंधान का रूप दिया। सीमित संसाधनों के बावजूद भारत ने इस क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर अपनी वैज्ञानिक क्षमता सिद्ध की है।

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के विकास में डॉ. विक्रम साराभाई का महत्वपूर्ण योगदान रहा। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो, ने अनुसंधान को देश की आवश्यकताओं से जोड़ा। वर्ष 1975 में प्रथम भारतीय उपग्रह आर्यभट्ट का प्रक्षेपण हुआ। यह भारत की अंतरिक्ष यात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव था। आगे चलकर स्वदेशी प्रक्षेपण यानों और उपग्रहों के विकास ने आत्मनिर्भरता की दिशा में देश का विश्वास बढ़ाया।

चंद्रयान-1 ने चंद्रमा के अध्ययन में उल्लेखनीय योगदान दिया। इन प्रयासों ने दिखाया कि भारतीय वैज्ञानिक जटिल अभियानों की योजना

बनाकर उन्हें सफलतापूर्वक पूरा कर सकते हैं। वैज्ञानिक उपलब्धियाँ युवाओं को भी शोध और नवाचार के लिए प्रेरित करती हैं।

अंतरिक्ष अनुसंधान का लाभ प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है। संचार उपग्रह दूरस्थ क्षेत्रों को जोड़ते हैं। मौसम संबंधी जानकारी किसानों और मछुआरों के लिए उपयोगी होती है। उपग्रह चित्र जल, वन और भूमि के अध्ययन में सहायता देते हैं। आपदाओं की निगरानी तथा राहत कार्यों की योजना में भी इनका उपयोग होता है।

अंतरिक्ष में आगे बढ़ते हुए भारत को अनुसंधान, वैज्ञानिक शिक्षा और प्रशिक्षित युवाओं पर निरंतर ध्यान देना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय सहयोग के साथ स्वदेशी तकनीक का विकास भी आवश्यक है। भारत के अंतरिक्ष प्रयास राष्ट्रीय गौरव का विषय हैं। उनका सबसे बड़ा उद्देश्य विज्ञान को सामान्य नागरिक के जीवन में उपयोगी बनाना और मानव-कल्याण को आगे बढ़ाना है।

चरण 4: निष्कर्ष अंतरिक्ष में भारत की प्रगति वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय गौरव और जनकल्याण की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

त्वरित सुझाव: निबंध में हर उपलब्धि के साथ उसका महत्व या उपयोग जोड़ें, ताकि लेख केवल तथ्यों की सूची न बने।

3(ख). नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

भारतीय संस्कृति [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट परिचय, सुव्यवस्थित विवेचन और सार्थक उपसंहार होना चाहिए।
- भाषा सरल, शुद्ध और प्रवाहपूर्ण हो; प्रत्येक अनुच्छेद विषय के एक पक्ष को विकसित करे।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाएँ प्राचीन परंपराओं, समन्वय, जीवन-मूल्यों और वर्तमान दायित्वों के आधार पर विषय विकसित करें। संस्कृति को केवल पहनावे या त्योहारों तक सीमित न रखें; उसमें विचार, कला, भाषा और व्यवहार भी आते हैं।

चरण 2: पूरा निबंध लिखें भारतीय संस्कृति

संस्कृति किसी समाज के जीवन को दिशा देने वाले विचारों, विश्वासों, कलाओं और आचरण का समुच्चय है। भारतीय संस्कृति की पहचान उसकी प्राचीनता, निरंतरता और विविध परंपराओं के बीच समन्वय में निहित है। यहाँ जीवन का आदर्श केवल निजी सुख नहीं, बल्कि परिवार, समाज और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व भी रहा है।

भारत में अनेक भाषाएँ, धर्म, वेशभूषाएँ और खान-पान प्रचलित हैं। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक रीति-रिवाज बदलते हैं, फिर भी अतिथि-सत्कार, बड़ों के प्रति सम्मान, सहयोग और करुणा जैसे मूल्य लोगों को जोड़ते हैं। अलग-अलग समुदायों के पर्व सामाजिक मेलजोल के अवसर बनते हैं। हमारी साहित्यिक परंपराएँ, संगीत, नृत्य, स्थापत्य और लोककलाएँ इस सांस्कृतिक समृद्धि को अभिव्यक्त करती हैं।

भारतीय संस्कृति ने समय के साथ अनेक प्रभावों को ग्रहण किया है। भक्ति और सूफी परंपराओं ने प्रेम तथा मानवीय समानता का संदेश दिया। विविध धाराओं के संवाद ने समाज को नए विचार दिए। इसीलिए संस्कृति को जड़ वस्तु समझना उचित नहीं; वह बदलते जीवन के साथ विकसित होती है।

आज उपभोक्तावाद, भाषाई उपेक्षा और सांप्रदायिक संकीर्णता हमारी साझा विरासत के लिए चुनौतियाँ हैं। साथ ही जातिगत भेदभाव और लैंगिक असमानता जैसी रूढ़ियों को संस्कृति के नाम पर बचाना भी अनुचित है। उपयोगी परंपराओं का संरक्षण और अन्यायपूर्ण प्रथाओं का परित्याग साथ-साथ आवश्यक हैं।

हमें अपनी भाषाओं, लोककलाओं और ऐतिहासिक धरोहरों का सम्मान करते हुए वैज्ञानिक दृष्टि तथा समानता को अपनाना चाहिए। भारतीय संस्कृति की सार्थक रक्षा तभी होगी जब उसका उदार और मानवीय स्वरूप हमारे दैनिक व्यवहार में दिखाई देगा।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत निबंध में भारतीय संस्कृति विषय को भूमिका, उदाहरणों, चुनौतियों और समाधान सहित क्रमबद्ध रूप में विकसित किया गया है।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले भारतीय संस्कृति के परिचय, प्रमुख पक्षों और उपसंहार के संकेत शब्द लिख लें; फिर प्रत्येक संकेत को एक अनुच्छेद में विकसित करें।

3(ग). नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

शिक्षा और समाज [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट परिचय, सुव्यवस्थित विवेचन और सार्थक उपसंहार होना चाहिए।
- भाषा सरल, शुद्ध और प्रवाहपूर्ण हो; प्रत्येक अनुच्छेद विषय के एक पक्ष को विकसित करे।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाएँ पहले शिक्षा और समाज का संबंध स्पष्ट करें। फिर व्यक्ति के विकास, सामाजिक परिवर्तन, वर्तमान कमियों और सुधार के उपायों को क्रम दें। उदाहरणों को मूल विषय से जोड़ें और शिक्षा को केवल नौकरी पाने का साधन न बताएँ।

चरण 2: पूरा निबंध लिखें शिक्षा और समाज

शिक्षा और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं। समाज विद्यालयों को भाषा, अनुभव और जीवन-मूल्य देता है, जबकि शिक्षा समाज को जागरूक, कुशल और उत्तरदायी नागरिक प्रदान करती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल पढ़ना-लिखना सीखना या परीक्षा उत्तीर्ण करना नहीं, बल्कि विचार करने और विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना भी है।

शिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों को समझता है। वह स्वास्थ्य, स्वच्छता, पर्यावरण और सार्वजनिक संपत्ति के प्रति सजग रहता है। शिक्षा उसे अंधविश्वासों तथा अफवाहों की जाँच करने का साहस देती है। लोकतंत्र में प्रश्न पूछने, मतभेद का सम्मान करने और सूचनाओं को परखने की क्षमता विशेष महत्त्व रखती है।

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम भी है। बालिकाओं की शिक्षा परिवारों में स्वास्थ्य और समानता की समझ बढ़ाती है। वंचित वर्गों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नए अवसर खोलती है। व्यावसायिक प्रशिक्षण और वैज्ञानिक ज्ञान उत्पादन तथा रोजगार की क्षमता बढ़ाते हैं। फिर भी केवल प्रमाणपत्रों की संख्या बढ़ जाने से समाज प्रगतिशील नहीं बनता; ज्ञान का संबंध संवेदनशील आचरण से होना चाहिए।

हमारे समाज में शिक्षा की गुणवत्ता और उपलब्धता में असमानता है। आर्थिक कठिनाइयाँ, सुविधाओं का अभाव और डिजिटल संसाधनों तक असमान पहुँच अनेक बच्चों की प्रगति रोकते हैं। रटने की प्रवृत्ति भी रचनात्मकता को सीमित करती है। इन समस्याओं के समाधान के लिए अच्छे शिक्षक, पुस्तकालय, सुरक्षित विद्यालय और प्रयोग-आधारित शिक्षण आवश्यक हैं।

परिवार और समुदाय को भी शिक्षा के कार्य में सहयोग देना चाहिए। विद्यालयों में सहानुभूति, श्रम का सम्मान और सामाजिक सहभागिता विकसित की जाए। ऐसी शिक्षा ही व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाकर समाज को अधिक न्यायपूर्ण, सहयोगी और प्रगतिशील दिशा दे सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत निबंध में शिक्षा और समाज विषय को भूमिका, उदाहरणों, चुनौतियों और समाधान सहित क्रमबद्ध रूप में विकसित किया गया है।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले शिक्षा और समाज के परिचय, प्रमुख पक्षों और उपसंहार के संकेत शब्द लिख लें; फिर प्रत्येक संकेत को एक अनुच्छेद में विकसित करें।

3(घ). नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

अनेकता में एकता [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट परिचय, सुव्यवस्थित विवेचन और सार्थक उपसंहार होना चाहिए।
- भाषा सरल, शुद्ध और प्रवाहपूर्ण हो; प्रत्येक अनुच्छेद विषय के एक पक्ष को विकसित करे।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाएँ भारत की विविधताओं का परिचय देकर साझा नागरिक जीवन से उनका संबंध समझाएँ। सांस्कृतिक उदाहरणों के बाद चुनौतियाँ तथा एकता बनाए रखने के उपाय लिखें। एकता का अर्थ सबकी भाषा या परंपरा एक जैसी होना नहीं है।

चरण 2: पूरा निबंध लिखें अनेकता में एकता

भारत विविधताओं का विशाल देश है। यहाँ भाषाएँ, धर्म, वेशभूषाएँ, भोजन और भौगोलिक परिस्थितियाँ अलग-अलग हैं। कहीं हिमालय की पर्वतीय संस्कृति है, कहीं समुद्रतटीय जीवन और कहीं मरुस्थलीय परंपराएँ। इन भिन्नताओं के बीच साझा देश के प्रति अपनत्व और परस्पर सहयोग की भावना ही अनेकता में एकता का आधार है।

भारतीय जीवन में विविधता और मेलजोल साथ दिखाई देते हैं। अलग-अलग भाषाओं का साहित्य हमारे अनुभवों को समृद्ध करता है। विभिन्न समुदायों के पर्व लोगों को एक-दूसरे के निकट लाते हैं। संगीत, खेल, यात्रा और व्यापार भी परिचय तथा सहयोग के अवसर बनते हैं। दूसरे की परंपरा को समझने से अपने समाज के प्रति दृष्टि व्यापक होती है।

राष्ट्रीय एकता का मजबूत आधार समान नागरिकता और संविधान में निहित न्याय, स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुता के आदर्श हैं। प्रत्येक नागरिक को गरिमा और अवसर मिलें, तभी देश के प्रति विश्वास बढ़ता है। स्वतंत्रता-संग्राम में विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के लोगों ने साझा उद्देश्य के लिए संघर्ष किया। यह अनुभव बताता है कि भिन्न पहचानें सामूहिक दायित्व निभाने में बाधा नहीं हैं।

सांप्रदायिकता, जातिगत भेदभाव, क्षेत्रीय कटुता और भाषाई अहंकार एकता को कमजोर करते हैं। अफवाहें और घृणा फैलाने वाले संदेश भी अविश्वास बढ़ाते हैं। इनसे बचने के लिए तथ्यों की जाँच, संवाद और संवेदनशील व्यवहार आवश्यक हैं। मतभेद का समाधान हिंसा से नहीं, न्यायपूर्ण तथा लोकतांत्रिक तरीकों से होना चाहिए।

विद्यालयों में विभिन्न संस्कृतियों का परिचय और सार्वजनिक जीवन में समान अवसर एकता को मजबूत कर सकते हैं। हमें अपनी भाषा और परंपरा से प्रेम करते हुए दूसरों का सम्मान भी करना चाहिए। भारत की शक्ति विविधताओं को मिटाने में नहीं, उन्हें सम्मानपूर्वक साथ लेकर चलने में है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत निबंध में अनेकता में एकता विषय को भूमिका, उदाहरणों, चुनौतियों और समाधान सहित क्रमबद्ध रूप में विकसित किया गया है।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले अनेकता में एकता के परिचय, प्रमुख पक्षों और उपसंहार के संकेत शब्द लिख लें; फिर प्रत्येक संकेत को एक अनुच्छेद में विकसित करें।

---

4. देश में क्षेत्रीयतावाद के कारण उत्पन्न समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को पत्र जनहित की समस्या पर जनता और प्रशासन का ध्यान आकर्षित करता है।
- पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, संपादक का पता, विषय, संबोधन, तथ्यपूर्ण निवेदन तथा समापन आवश्यक हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना इस पत्र में क्षेत्रीयतावाद से पैदा होने वाले भेदभाव, हिंसा, पलायन और राष्ट्रीय एकता पर पड़ने वाले प्रभावों को रखना है। भाषा शिष्ट तथा तर्कपूर्ण होगी। किसी क्षेत्र या भाषा को दोष देने के बजाय संकीर्ण मानसिकता और उसके दुष्परिणामों पर चर्चा करेंगे। अंत में समाचार-पत्र के माध्यम से जागरूकता और प्रशासनिक कार्रवाई का अनुरोध करेंगे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 25, विकास नगर, नई दिल्ली

दिनांक : 12 मार्च, 2014

सेवा में,

संपादक महोदय,

दैनिक जनवाणी,

नई दिल्ली।

विषय : क्षेत्रीयतावाद से उत्पन्न समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करने के संबंध में।

महोदय,

आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं देश में बढ़ते क्षेत्रीयतावाद की समस्या की ओर जनता तथा प्रशासन का ध्यान आकर्षित

करना चाहता हूँ। अपनी भाषा और संस्कृति से प्रेम स्वाभाविक है, किंतु दूसरे प्रदेश के लोगों को पराया मानना राष्ट्रीय एकता के लिए घातक है।

कुछ स्थानों पर रोजगार और शिक्षा के अवसरों को लेकर बाहरी कहे जाने वाले नागरिकों के साथ भेदभाव किया जाता है। इससे आपसी अविश्वास, हिंसा तथा असुरक्षा बढ़ती है। लोग काम छोड़कर पलायन करने लगते हैं और व्यापार एवं विकास प्रभावित होते हैं। क्षेत्रीय पहचान के नाम पर फैलाया गया वैमनस्य संविधान की समानता और बंधुत्व की भावना को भी कमजोर करता है।

आवश्यक है कि प्रशासन भेदभाव और हिंसा पर कठोर कार्रवाई करे। विद्यालयों में विविध संस्कृतियों के प्रति सम्मान बढ़ाया जाए तथा रोजगार के अवसरों का संतुलित विकास हो। समाचार-पत्र भी जिम्मेदार लेखों और संवाद के माध्यम से सद्भाव का वातावरण बना सकते हैं।

कृपया इस समस्या को अपने पत्र में स्थान देकर जनजागरण में सहयोग दें।

धन्यवाद।

भवदीय,

अमित कुमार

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में क्षेत्रीयतावाद के सामाजिक और आर्थिक दुष्परिणामों के साथ समानता, सद्भाव तथा प्रभावी प्रशासनिक कार्रवाई की आवश्यकता स्पष्ट की गई है।

त्वरित सुझाव: समस्या, उसके प्रभाव और व्यावहारिक सुझाव लिखें; किसी प्रदेश या भाषा के विरुद्ध आरोप न लगाएँ।

अथवा

4. अस्पताल में किसी रोगी के इलाज में बरती गई लापरवाही का विवरण देते हुए वरिष्ठ चिकित्साधिकारी को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायत-पत्र में घटना का स्पष्ट विवरण और संबंधित अधिकारी से उचित कार्रवाई का निवेदन किया जाता है।
- मरीज की पहचान, उपचार में हुई चूक और उससे हुई परेशानी को क्रमबद्ध तथा संयत भाषा में लिखना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विवरण की योजना प्रेषक का पता और दिनांक लिखने के बाद वरिष्ठ चिकित्साधिकारी का पद व अस्पताल का पता देंगे। विषय में उपचार की लापरवाही का उल्लेख होगा। पत्र में भर्ती की तारीख, वार्ड, चिकित्सकीय सहायता मिलने में देरी तथा शिकायत की स्थिति बताएँगे। फिर जाँच, नियमित निगरानी और बेहतर व्यवस्था की माँग करेंगे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 18, शांति विहार, नई दिल्ली

दिनांक : 12 मार्च, 2014

सेवा में,

वरिष्ठ चिकित्साधिकारी,

जनकल्याण अस्पताल,

नई दिल्ली।

विषय : रोगी के उपचार में बरती गई लापरवाही के संबंध में शिकायत।

महोदय,

मैं आपके अस्पताल में अपने पिताजी के उपचार के दौरान बरती गई लापरवाही की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। मेरे पिताजी श्री रमेश कुमार को 10 मार्च, 2014 को तेज बुखार और कमजोरी के कारण चिकित्सा वार्ड में भर्ती कराया गया था। उनकी पंजीकरण संख्या 245 है।

भर्ती होने के बाद कई बार अनुरोध करने पर भी चिकित्सकीय परीक्षण में काफी देर हुई। निर्धारित समय पर दवा नहीं दी गई और आवश्यक

जाँच के लिए भी लंबा इंतजार करना पड़ा। रात में उनकी परेशानी बढ़ने पर सहायता के लिए बार-बार बुलाना पड़ा। ड्यूटी पर उपस्थित कर्मचारियों को सूचित करने के बावजूद समय पर डॉक्टर को नहीं बुलाया गया। इस कारण रोगी और परिजनों को अत्यधिक मानसिक कष्ट हुआ।

हमारा उद्देश्य किसी कर्मचारी पर अनुचित आरोप लगाना नहीं, बल्कि उपचार की व्यवस्था में सुधार कराना है। कृपया संबंधित अभिलेखों और ड्यूटी विवरण के आधार पर घटना की निष्पक्ष जाँच करवाएँ। रोगियों की नियमित निगरानी, समय पर दवा तथा आपातकालीन सहायता की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। शिकायत की जाँच और की गई कार्रवाई से हमें अवगत कराने की कृपा करें।

धन्यवाद।

भवदीय,

अमित कुमार

रोगी का पुत्र

चरण 3: निष्कर्ष शिकायत में उपचार की चूक का क्रमबद्ध विवरण देकर निष्पक्ष जाँच, समय पर चिकित्सा सहायता और व्यवस्था में सुधार का अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: शिकायत-पत्र में घटना की तारीख, रोगी का विवरण और अपेक्षित कार्रवाई स्पष्ट रखें; भाषा शिष्ट रखें।

5(क)(i). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

'फोन इन' क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार में तात्कालिक सूचना देने के लिए संवाददाता से सीधा संपर्क किया जाता है।
- फोन इन में यह संपर्क टेलीफोन के माध्यम से होता है।

चरण 1: प्रक्रिया की पहचान समाचार प्रस्तुत करते समय एंकर घटनास्थल पर मौजूद संवाददाता या संबंधित व्यक्ति से टेलीफोन पर संपर्क करता है और घटना की ताजा जानकारी लेता है।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर टेलीविजन समाचार के दौरान एंकर का संवाददाता या संबंधित व्यक्ति से फोन पर सीधी बातचीत करके दर्शकों को ताजा सूचना देना 'फोन इन' कहलाता है। इसमें चित्रों की सीधी उपलब्धता आवश्यक नहीं होती।

चरण 3: निष्कर्ष फोन के माध्यम से प्रसारित यह सीधा संवाद समाचार को तात्कालिक और अधिक सूचनापूर्ण बनाता है।

त्वरित सुझाव: फोन इन की परिभाषा में टेलीफोन द्वारा सीधा संपर्क और ताजा जानकारी, दोनों का उल्लेख करें।

5(क)(ii). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

पत्रकारिता में 'बीट' शब्द का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-संस्थाएँ नियमित समाचार-संग्रह के लिए पत्रकारों में कार्यक्षेत्र बाँटती हैं।
- बीट किसी संवाददाता को सौंपा गया निश्चित विषय या क्षेत्र होता है।

चरण 1: कार्य-विभाजन को समझना हर संवाददाता को सभी विषयों की खबरें जुटाने के बजाय किसी निश्चित क्षेत्र पर नियमित नजर रखने का दायित्व दिया जा सकता है। इससे वह अपने क्षेत्र के स्रोतों और घटनाओं से परिचित रहता है।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर पत्रकारिता में 'बीट' समाचार-संग्रह के लिए पत्रकार को सौंपे गए निश्चित क्षेत्र या विषय को कहते हैं; जैसे अपराध, शिक्षा, खेल या राजनीति। पत्रकार उस क्षेत्र की घटनाओं की नियमित जानकारी जुटाकर समाचार तैयार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष बीट पत्रकार का निर्धारित समाचार-संग्रह क्षेत्र है, जिसके प्रति वह नियमित रूप से उत्तरदायी होता है।

त्वरित सुझाव: बीट का अर्थ बताते समय निश्चित कार्यक्षेत्र लिखें और शिक्षा या अपराध जैसा एक उदाहरण दें।

5(क)(iii). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

सम्पादकीय में लेखक का नाम क्यों नहीं होता ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय समसामयिक विषय पर समाचार-पत्र की संस्थागत राय प्रस्तुत करता है।
- यह किसी लेखक के निजी विचारों वाले हस्ताक्षरित लेख से भिन्न होता है।

चरण 1: दृष्टिकोण की पहचान संपादकीय में व्यक्त विचार समाचार-पत्र की नीति और उसके सामूहिक संपादकीय दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए पाठक उसे किसी एक लेखक की व्यक्तिगत टिप्पणी के रूप में नहीं पढ़ता।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर संपादकीय में लेखक का नाम इसलिए नहीं होता क्योंकि वह किसी व्यक्ति की निजी राय नहीं, बल्कि पूरे समाचार-पत्र का मत तथा संपादकीय नीति व्यक्त करता है। उसकी जिम्मेदारी समाचार-पत्र की होती है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय की संस्थागत प्रकृति के कारण उसके साथ व्यक्तिगत लेखक का नाम नहीं दिया जाता।

त्वरित सुझाव: संपादकीय में नाम न होने का कारण समाचार-पत्र का सामूहिक मत है; इसे लेखक की अज्ञात पहचान न बताएँ।

5(क)(iv). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

स्वतन्त्र पत्रकार किसे कहा जाता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में पत्रकारों का वर्गीकरण उनके किसी समाचार-संस्थान से संबंध और काम करने की पद्धति के आधार पर होता है।
- स्वतंत्र पत्रकार किसी एक समाचार-संस्थान का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी नहीं होता।

चरण 1: कार्य की स्थिति पहचानें स्वतंत्र पत्रकार अपनी स्वतंत्र हैसियत से समाचार, लेख, फ़ीचर या अन्य पत्रकारितापरक सामग्री तैयार करता है। वह किसी एक अखबार या पत्रिका की स्थायी नौकरी से बँधा नहीं रहता।

चरण 2: पारिश्रमिक का आधार समझें वह अपनी सामग्री विभिन्न समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं को प्रकाशन के लिए देता है तथा प्रकाशित या स्वीकृत सामग्री के आधार पर पारिश्रमिक प्राप्त करता है। इसे फ्रीलांस पत्रकारिता भी कहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जो पत्रकार किसी एक समाचार-संस्थान का नियमित कर्मचारी बने बिना स्वतंत्र रूप से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए लिखता है और अपनी सामग्री के लिए पारिश्रमिक पाता है, वह स्वतंत्र पत्रकार कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में स्थायी नौकरी से स्वतंत्रता और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए लेखन, दोनों बातें लिखें।

5(क)(v). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

स्तम्भ लेखन से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्तंभ-लेखन पत्रकारिता की एक नियमित और व्यक्तित्वप्रधान लेखन-विधा है।
- इसमें किसी निश्चित स्तंभ या शीर्षक के अंतर्गत लेखक समसामयिक विषयों पर अपनी दृष्टि और विचार प्रस्तुत करता है।

चरण 1: नियमितता और स्थान पहचानें समाचार-पत्र या पत्रिका में किसी निश्चित स्थान अथवा स्तंभ में नियमित अंतराल पर प्रकाशित होने वाला लेखन स्तंभ-लेखन कहलाता है। प्राय: उसका एक निश्चित शीर्षक होता है।

चरण 2: लेखकीय दृष्टि स्पष्ट करें स्तंभकार राजनीति, समाज, संस्कृति या अन्य समसामयिक विषय पर टिप्पणी और विश्लेषण करता है। उसमें उसकी अपनी विचार-दृष्टि तथा विशिष्ट शैली महत्त्वपूर्ण होती है; वह केवल घटना का साधारण समाचार नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष पत्र-पत्रिका में निश्चित स्तंभ या शीर्षक के अंतर्गत नियमित रूप से किसी विषय पर लेखक के निजी विचार, टिप्पणी और विश्लेषण का प्रकाशन स्तंभ-लेखन कहलाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में निश्चित स्तंभ, नियमित प्रकाशन और लेखक की निजी दृष्टि का उल्लेख अवश्य करें।

5(ख). 'केदारनाथ आपदा : प्रकृति का कोप' विषय पर आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी समसामयिक विषय का तथ्यपूर्ण, क्रमबद्ध और विचारपूर्ण विवेचन होता है।
- प्राकृतिक आपदा पर लिखते समय घटना, मानवीय क्षति, पर्यावरण संबंधी कारण और बचाव के उपायों को संतुलित रूप में रखना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय-सीमा तय करें शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दें। भूमिका में केदारनाथ की त्रासदी का संदर्भ रखें। मुख्य भाग में भारी वर्षा और बाढ़, मानवीय हस्तक्षेप तथा प्रभावित लोगों की कठिनाइयों की चर्चा करें। अंत में सुरक्षित विकास और आपदा-तैयारी का संदेश दें।

चरण 2: विषय की सामग्री क्रमबद्ध करें आलेख में प्राकृतिक प्रक्रिया को पूरी तरह मानवीय गतिविधियों का परिणाम न बताएँ। भारी वर्षा और उफनते जल ने आपदा उत्पन्न की, जबकि असुरक्षित निर्माण, पर्यावरण की उपेक्षा और अपर्याप्त तैयारी ने उसकी विनाशकता बढ़ाई। राहतकर्मियों के योगदान और भविष्य के ठोस उपायों को भी स्थान दें।

चरण 3: पूर्ण आलेख केदारनाथ आपदा : प्रकृति का कोप

लेखक : एक विद्यार्थी

जून 2013 में केदारनाथ क्षेत्र में आई आपदा ने पूरे देश को झकझोर दिया। तीर्थयात्रा का पवित्र स्थान देखते-ही-देखते विनाश और शोक का दृश्य बन गया। अत्यधिक वर्षा, उफनती नदियों और मलबे के तेज प्रवाह ने रास्तों, पुलों और बस्तियों को भारी क्षति पहुँचाई। अनेक लोगों ने अपने परिजन खो दिए और हजारों यात्री कठिन परिस्थितियों में फँस गए।

यह त्रासदी केवल प्रकृति की प्रचंड शक्ति की याद नहीं दिलाती, बल्कि हमारी विकास-दृष्टि पर भी प्रश्न उठाती है। हिमालय का पर्यावरण अत्यंत संवेदनशील है। नदी-तटों पर असुरक्षित निर्माण, अनियंत्रित पर्यटन, वनों की कटाई और प्राकृतिक जलमार्गों की उपेक्षा आपदा के प्रभाव को बढ़ा सकते हैं। सुविधाएँ जुटाते समय यदि पहाड़ों की सहन-क्षमता को भुला दिया जाए, तो उसका मूल्य मनुष्य को ही चुकाना पड़ता है।

इस संकट में सेना, बचाव दलों और स्थानीय लोगों ने साहस तथा मानवीय संवेदना का परिचय दिया। कठिन मौसम और टूटे मार्गों के बीच लोगों को सुरक्षित निकालना असाधारण कार्य था। पुनर्वास में केवल भवन बनाना पर्याप्त नहीं; आजीविका, स्वास्थ्य और मानसिक संबल की व्यवस्था भी आवश्यक है।

भविष्य में ऐसी क्षति घटाने के लिए मौसम की चेतावनी का समय पर प्रसार, सुरक्षित निकासी-मार्ग, प्रशिक्षित बचाव दल और निर्माण संबंधी नियमों का कठोर पालन जरूरी है। यात्रियों की संख्या और स्थानीय संसाधनों के बीच संतुलन भी बने। केदारनाथ की त्रासदी हमें सिखाती है कि प्रकृति के साथ सहयोग करके ही टिकाऊ विकास संभव है।

चरण 4: निष्कर्ष केदारनाथ की आपदा से सीख लेकर पर्यावरण के अनुकूल विकास, सुरक्षित निर्माण और प्रभावी आपदा-प्रबंधन को प्राथमिकता देनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: आलेख को घटना के वर्णन तक सीमित न रखें; कारण, मानवीय पक्ष और व्यावहारिक बचाव के उपाय भी जोड़ें।

अथवा

5(ख). 'बढ़ती हुई सुविधाएँ और घटता हुआ स्वास्थ्य' विषय पर आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय की भूमिका, कारण-परिणाम का विवेचन और उपयोगी निष्कर्ष क्रमबद्ध होते हैं।
- स्वास्थ्य संबंधी इस विषय में सुविधाओं के साथ बढ़ती निष्क्रियता, असंतुलित दिनचर्या और सुधार के उपाय मुख्य बिंदु हैं।

चरण 1: प्रारूप और योजना बनाएँ प्रभावी शीर्षक और लेखक का नाम दें। भूमिका में आधुनिक सुविधाओं का उल्लेख करें। मुख्य भाग में शारीरिक श्रम की कमी, भोजन, नींद और मानसिक दबाव की चर्चा करें। समापन में सुविधाओं के विवेकपूर्ण उपयोग और स्वस्थ जीवनशैली का आग्रह रखें।

चरण 2: तर्क का संतुलन बनाएँ सुविधाएँ समय बचाती हैं और चिकित्सा तथा संचार में सहायता करती हैं। समस्या उनका होना नहीं, उन पर ऐसा निर्भर हो जाना है कि चलना-फिरना, विश्राम और सामाजिक संपर्क घट जाएँ। इसलिए आलेख में लाभ स्वीकार करते हुए गलत आदतों और उनके समाधान को स्पष्ट करें।

चरण 3: पूर्ण आलेख बढ़ती हुई सुविधाएँ और घटता हुआ स्वास्थ्य

लेखक : एक विद्यार्थी

आज मनुष्य के पास पहले से कहीं अधिक सुविधाएँ हैं। वाहन दूरियाँ घटाते हैं, मशीनें श्रम बचाती हैं और मोबाइल अनेक काम घर बैठे कर देता है। चिकित्सा-सुविधाओं ने भी जीवन को सुरक्षित बनाया है। फिर भी अनेक लोगों की दिनचर्या में थकान, बेचैनी और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बढ़ती दिखाई देती हैं। यह विरोधाभास हमारी आदतों पर विचार करने की माँग करता है।

सुविधाओं पर अत्यधिक निर्भरता ने शारीरिक गतिविधि घटा दी है। छोटी दूरी के लिए भी वाहन लेना और घंटों कुर्सी पर बैठना सामान्य हो गया है। बचे हुए समय का उपयोग व्यायाम के बजाय अक्सर स्क्रीन देखने में होता है। देर रात तक मोबाइल चलाने से पर्याप्त नींद नहीं मिलती। जल्दी में भोजन करना तथा बार-बार अधिक तला-भुना खाना भी शरीर के लिए हानिकारक आदतें हैं।

मानसिक स्वास्थ्य भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। लगातार सूचनाएँ, प्रतिस्पर्धा और हर समय उपलब्ध रहने का दबाव मन को विश्राम नहीं लेने देते। परिवार के साथ बातचीत और खुले वातावरण में समय बिताने के अवसर घटते हैं। सुविधा से मिली गति तभी उपयोगी है, जब उसके बीच संतुलन और आत्मनियंत्रण बना रहे।

समाधान सुविधाओं को त्यागना नहीं, उनका समझदारी से उपयोग करना है। नियमित पैदल चलना, अपनी क्षमता के अनुसार व्यायाम करना, संतुलित भोजन लेना और पर्याप्त नींद लेना आवश्यक है। काम के बीच उठकर थोड़ा चलना तथा स्क्रीन के लिए समय-सीमा तय करना भी उपयोगी कदम हैं। बच्चों और बड़ों को खेल, संवाद और प्रकृति से जुड़ने के अवसर मिलने चाहिए।

वास्तविक प्रगति वही है जो जीवन को सुविधाजनक बनाने के साथ स्वस्थ भी बनाए। तकनीक हमारी सहायक बने और हम अपनी दिनचर्या के सजग संचालक बने रहें।

चरण 4: निष्कर्ष सुविधाओं का विवेकपूर्ण उपयोग, नियमित शारीरिक गतिविधि, संतुलित भोजन और पर्याप्त विश्राम ही सुविधा तथा स्वास्थ्य के बीच संतुलन बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: केवल सुविधाओं की निंदा न करें; स्वास्थ्य पर प्रभाव समझाकर दिनचर्या में किए जा सकने वाले सुधार सुझाएँ।

6. 'मेट्रो रेल का सफ़र' विषय पर फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय का रोचक, अनुभवप्रधान और संवेदनशील चित्रण करता है। इसमें दृश्य, मानवीय प्रसंग और विचार सहज रूप से जुड़े होते हैं।
- यहाँ यात्रा के वातावरण, यात्रियों की विविधता, मेट्रो की सुविधाओं तथा नागरिक अनुशासन को केंद्र में रखना है।

चरण 1: रूप और प्रस्तुति आकर्षक शीर्षक और लेखक का नाम देकर किसी सजीव दृश्य से आरंभ करें। फिर यात्रा के अनुभव के सहारे विषय के सामाजिक पक्ष सामने रखें। भाषा सरल, चित्रात्मक और प्रवाहपूर्ण हो; आलेख केवल सुविधाओं की सूची न बन जाए।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना स्टेशन का दृश्य, प्रवेश और सुरक्षा-जाँच, डिब्बे का वातावरण, खिड़की से दिखता नगर तथा समय की बचत को क्रम से रखें। अंत में स्वच्छता और सहयात्रियों के प्रति संवेदनशीलता का संदेश जोड़ें। प्रश्न में शब्द-सीमा नहीं दी गई है, इसलिए विषय को पर्याप्त विस्तार देते हुए अनावश्यक दोहराव से बचें।

चरण 3: पूर्ण नमूना फ़ीचर मेट्रो रेल का सफ़र: शहर की धड़कनों के साथ

लेखक: अनिल कुमार

सुबह का समय है। सड़क पर वाहनों की लंबी कतारें रेंग रही हैं, लेकिन मेट्रो स्टेशन पर कदम रखते ही यात्रा की एक अलग दुनिया खुलती है। सुरक्षा-जाँच के बाद प्रवेश-द्वार पार करते यात्री तेजी से प्लेटफ़ॉर्म की ओर बढ़ते हैं। किसी के कंधे पर बस्ता है, किसी के हाथ में दफ़्तर की फ़ाइल और किसी की आँखों में पहली यात्रा का उत्साह।

घोषणा सुनाई देती है और चमकती रेल सामने आकर रुक जाती है। दरवाजे खुलते ही उतरने वालों को रास्ता देने की छोटी-सी शिष्टता सफ़र को सहज बना देती है। भीतर कोई पुस्तक पढ़ रहा है, कोई अगले स्टेशन की सूचना देख रहा है। अलग-अलग मंजिलों के यात्री कुछ समय के लिए एक ही गति के साथी बन जाते हैं।

भूमिगत अँधेरे से निकलकर रेल जब ऊँचे मार्ग पर पहुँचती है, शहर का नया चेहरा दिखाई देता है। नीचे भीड़भरी सड़कें, दूर इमारतें और बीच-बीच में पेड़ों की हरियाली। जिन दूरियों को सड़क पर तय करने में थकान होती थी, वे अब सहज लगती हैं। समय की बचत, सार्वजनिक परिवहन की सुविधा और यातायात का दबाव घटाने की संभावना मेट्रो को खास बनाती है।

फिर भी सुखद सफ़र केवल मशीनों से नहीं बनता। बुजुर्ग को सीट देना, दरवाजे पर भीड़ न लगाना और परिसर को स्वच्छ रखना हमारी जिम्मेदारी है। मेरा स्टेशन आ गया है। उतरते हुए लगता है कि मेट्रो शहर को जोड़ने के साथ हमें साथ चलने का सलीका भी सिखाती है।

चरण 4: निष्कर्ष यह फ़ीचर यात्रा के सजीव अनुभव के माध्यम से मेट्रो की उपयोगिता और जिम्मेदार यात्री-व्यवहार को उभारता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर में किसी दृश्य से शुरुआत करें और उसी अनुभव से सामाजिक संदेश तक पहुँचें।

अथवा

6. 'विवाहों में प्रदर्शन और अपव्यय' विषय पर फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक विषय के फ़ीचर में दृश्यात्मक वर्णन के साथ मानवीय प्रभाव और विचार प्रस्तुत किए जाते हैं।
- विवाहों में प्रदर्शन और अपव्यय पर लिखते समय उत्सव की गरिमा, अनावश्यक खर्च, भोजन की बरबादी और सामाजिक दबाव के संबंध को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: रूप और दृष्टिकोण शीर्षक और लेखक का नाम देकर विवाह-स्थल के किसी दृश्य से शुरुआत करें। फिर खर्च के पीछे की प्रतिष्ठा-दौड़ तथा परिवारों पर पड़ने वाले प्रभाव दिखाएँ। विवेचना संवेदनशील हो और अंत में व्यावहारिक बदलाव सुझाए जाएँ।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना चमकती सजावट से आरंभ कर दिखावे की प्रतिस्पर्धा, ऋण का बोझ, भोजन और संसाधनों की बरबादी

तथा सादगीपूर्ण विवाह के विकल्प रखें। किसी काल्पनिक आँकड़े को तथ्य न बनाएँ। उदाहरणों और चित्रात्मक भाषा से विषय को प्रभावी बनाएँ।

चरण 3: पूर्ण नमूना फ़ीचर शहनाइयों के बीच दिखावे का शोर

लेखिका: सीमा शर्मा

रोशनी की लड़ियों से जगमगाता प्रवेश-द्वार, फूलों की ऊँची मेहराबें और व्यंजनों से भरे काउंटर! विवाह-स्थल पर कदम रखते ही उत्सव की चमक चकाचौंध कर देती है। पर एक ओर मेजों पर छोड़ी गई भरी थालियाँ देखकर मन में सवाल उठता है: क्या रिश्ते का स्वागत इतनी बरबादी के बिना नहीं हो सकता?

विवाह दो व्यक्तियों और परिवारों के जीवन का आत्मीय अवसर है। आज कई बार उसकी चर्चा संबंधों से अधिक सजावट, महँगे वस्त्र, उपहार और आयोजन के खर्च को लेकर होती है। एक परिवार दूसरे से बढ़कर करने की कोशिश करता है। आनंद के इस अवसर पर प्रतिष्ठा की ऐसी दौड़ शुरू हो जाती है, जिसमें सामर्थ्य से अधिक खर्च भी सामान्य लगने लगता है।

इसका सबसे कठिन असर उन परिवारों पर पड़ता है जो सामाजिक दबाव में उधार लेकर आयोजन करते हैं। समारोह समाप्त हो जाता है, पर आर्थिक बोझ बना रहता है। विवाह को लेन-देन और दहेज से जोड़ना इस स्थिति को और कष्टदायक बनाता है। रिश्तों की गरिमा वस्तुओं और धन से आँकी जाने लगे, तो उत्सव का मूल भाव खो जाता है।

भोजन की बरबादी भी उपेक्षा का विषय नहीं है। अनगिनत व्यंजनों की जगह सीमित और सुव्यवस्थित भोजन रखा जा सकता है। अतिथियों को आवश्यकता के अनुसार भोजन लेना चाहिए। बचा हुआ सुरक्षित भोजन जिम्मेदार व्यवस्था के माध्यम से जरूरतमंदों तक पहुँचाया जा सकता है।

बदलाव की शुरुआत घर से होगी। सीमित अतिथि, अनावश्यक सजावट से परहेज, दहेज का स्पष्ट निषेध और सामर्थ्य के अनुसार आयोजन विवाह को अधिक सहज बना सकते हैं। शहनाई की मिठास खर्च की ऊँचाई में नहीं, अपनापन बाँटने में है। यही समझ उत्सव को सच्ची खुशी दे सकती है।

चरण 4: निष्कर्ष सादगीपूर्ण, दहेजरहित और जिम्मेदार आयोजन विवाह की आत्मीयता बचाते हैं तथा परिवार और समाज को अनावश्यक अपव्यय से मुक्त कर सकते हैं।

त्वरित सुझाव: सामाजिक फ़ीचर में समस्या के दृश्य, मानवीय असर और व्यावहारिक समाधान तीनों जोड़ें।

---

7. जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बैचेन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
छतों के खतरनाक किनारों तक –
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं
महज एक धागे के सहारे ।
प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [8 अंक]

7(क). 'वे अपने साथ लाते हैं कपास' – 'वे' कौन हैं ? साथ में कपास लाने से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सर्वनाम का संदर्भ पद्यांश के केंद्रीय पात्रों से पहचानना चाहिए। यहाँ पतंग के साथ खेलते, दौड़ते बच्चे चित्रित हैं।
- कपास की कोमलता बाल-शरीर के हलकेपन, लचीलेपन और मासूम प्रकृति का बिंब है।

चरण 1: वे का संदर्भ यहाँ 'वे' पतंग उड़ाने और लूटने में मग्न बच्चों के लिए आया है। उनके बेचैन पैर, बेसुध दौड़ और रोमांचित शरीर का उल्लेख इसी बाल-जगत को स्पष्ट करता है। वे उत्साह से भरे हैं और खेल में पूरी तरह डूब जाते हैं।

चरण 2: कपास लाने का आशय जन्म से अपने साथ कपास लाने का अर्थ सचमुच कपास लेकर जन्म लेना नहीं है। कवि बच्चों के स्वभाव और शरीर की सहज कोमलता, हलकेपन तथा लचक को कपास के बिंब से व्यक्त करता है। इसी कारण खेलते समय उनकी चंचल गति सहज और मुक्त प्रतीत होती है। कठोर छतों को भी नरम बना देने का अगला चित्र उनकी इसी कोमल, जीवन्त उपस्थिति को आगे बढ़ाता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'वे' पतंग के खेल में मग्न बच्चे हैं। कपास उनके जन्मजात कोमलपन, हलकेपन और लचीली बाल-प्रकृति का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: काव्य-बिंब का शाब्दिक अर्थ न लें; आसपास की पंक्तियों से उसका भाव स्पष्ट करें।

7(ख). पतंग लूटते बच्चों की तुलना डाल से क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलना समझाते समय उपमेय और उपमान का साझा गुण बताना आवश्यक है।
- यहाँ बच्चों की दौड़ती, झुकती और पेंग भरती देह का साम्य डाल के लचीलेपन से है।

चरण 1: तुलना का आधार पतंग के पीछे दौड़ते बच्चों के शरीर में डाल जैसी लचक और लोच है। वे कभी झुकते हैं, कभी उछलते हैं और कभी आगे की ओर पेंग भरते हैं। जैसे डाल गति या दबाव के साथ लचकती है, वैसे ही बच्चों की देह खेल के उत्साह में सहज रूप से मुड़ती और सँभलती है।

चरण 2: काव्यगत प्रभाव 'डाल की तरह लचीले वेग' से कवि उनकी फुर्ती, चंचलता और स्वाभाविक शारीरिक संतुलन का चित्र बनाता है। यह केवल बच्चों के दुबले होने की तुलना नहीं है; मुख्य बात उनकी गति का लचीलापन है। छत के किनारों तक जाते समय भी उनकी देह रोमांच और सक्रियता से भरी है। इस चित्र से बालपन की मुक्त ऊर्जा और खेल में पूरी तरह डूब जाने की अवस्था उभरती है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों की तुलना डाल से उनके लचीले शरीर, फुर्तीली गति और पेंग भरते हुए झुकने-उछलने के कारण की गई है।

त्वरित सुझाव: तुलना के उत्तर में दोनों पक्षों का साझा गुण बताएँ; यहाँ प्रमुख गुण लचक है।

7(ग). दिशाओं को मृदंगों की तरह बजाने से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में ध्वनि-बिंब वातावरण को श्रव्य अनुभव बनाता है। मृदंग लय और गूँज का बोध कराता है।
- बच्चों की दौड़, पुकार और उत्साह के फैलाव को समझकर पंक्ति का आशय स्पष्ट होता है।

चरण 1: मृदंग के बिंब का अर्थ मृदंग बजने पर उसकी लयबद्ध ध्वनि आसपास गूँजती है। इसी तरह पतंग के खेल में मग्न बच्चों की दौड़, पदचाप, पुकार और हर्ष की ध्वनियों से चारों ओर का वातावरण गूँज उठता है। कवि दिशाओं को सचमुच कोई वाद्य नहीं मानता; वह पूरे परिवेश में फैलती बाल-चहलपहल का चित्र देता है।

चरण 2: उल्लास और गति का विस्तार बच्चे इतने उत्साहित और सक्रिय हैं कि उनका आनंद किसी एक स्थान तक सीमित नहीं रहता। उनकी हलचल मानो सभी दिशाओं में लय और संगीत भर देती है। इस प्रकार मृदंग का बिंब बच्चों की तेज गति के साथ खेल की सामूहिक उमंग को भी व्यक्त करता है। पद्यांश में आगे आया 'रोमांचित शरीर का संगीत' भी इसी जीवंत, लयपूर्ण अनुभव से जुड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि बच्चों की दौड़, पुकार और उल्लास से चारों दिशाएँ मृदंग की लयपूर्ण गूँज की तरह जीवंत हो उठती हैं।

त्वरित सुझाव: मृदंग के बिंब को बच्चों की पदचाप, पुकार और उल्लास से जोड़कर आशय लिखें।

7(घ). छतों के किनारों से गिरने से उन्हें कौन बचाता है और कैसे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बच्चों की सुरक्षा को उनके उत्साह, लचीले शरीर और सहज संतुलन से जोड़ा गया है।
- पतंग की ऊँचाई और डोर में बच्चों के तन्मय आत्मविश्वास का बिंब है।

चरण 1: बचाने वाले तत्व को पहचानें कवि स्पष्ट कहता है कि बच्चों को गिरने से उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत बचाता है। यहाँ संगीत से आशय किसी बाहर बजते वाद्य से नहीं, बल्कि उत्साह में भरे शरीर की लय, चपलता और संतुलित गति से है। बच्चे पतंग उड़ाने में इतने तल्लीन होते हैं कि उनके शरीर की प्रत्येक क्रिया उसी आनंद की लय में चलती है।

चरण 2: बचने की प्रक्रिया समझें डाल की तरह लचीला शरीर उन्हें छत के किनारे पहुँचकर भी संतुलन साधने देता है। पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ मानो उन्हें एक धागे के सहारे थाम लेती हैं। यह कवि की कल्पना है, जिसमें पतंग के प्रति लगाव, निर्भीकता और शरीर की सहज सजगता मिलकर बच्चों को गिरने से बचाते दिखाई देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों को उनके रोमांचित शरीर की लय, लचीलापन और सहज संतुलन बचाते हैं; पतंगों की ऊँचाइयाँ मानो डोर के सहारे उन्हें थाम लेती हैं।

त्वरित सुझाव: रोमांचित शरीर का संगीत पद से शरीर की लय और संतुलन समझाएँ; पतंग का सचमुच बच्चे को उठाए रहना न लिखें।

अथवा

7. आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी ।
प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [8 अंक]

7(क). कवि ने चाँद का टुकड़ा किसे कहा है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमान के माध्यम से शिशु की सुंदरता और माँ के वात्सल्य का अर्थ स्पष्ट करना है।
- किसे कहा गया है और क्यों कहा गया है, इन दोनों प्रश्नों का अलग उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: उपमेय को पहचानें कवि ने माँ की गोद में झूलते छोटे बच्चे को चाँद का टुकड़ा कहा है। आँगन में खड़ी माँ अपने हाथों पर शिशु को झुलाती है और बीच-बीच में हवा में उछालती है। इसलिए यहाँ चाँद के टुकड़े का संकेत आकाश के वास्तविक चंद्रमा की ओर नहीं, उस स्नेहिल दृश्य के केंद्र में स्थित बच्चे की ओर है।

चरण 2: तुलना का आधार स्पष्ट करें बच्चा चाँद के समान सुंदर, उज्ज्वल और मन को आनंद देने वाला है। उसकी निष्कलुषता, कोमलता तथा आकर्षक रूप माँ को मोह लेते हैं। चाँद का टुकड़ा कहकर कवि उसकी मोहक छवि और माँ के लिए उसके अत्यंत प्रिय होने का भाव एक साथ व्यक्त करता है। बच्चे की खिलखिलाहट इस सौंदर्य को और भी जीवंत बना देती है।

चरण 3: निष्कर्ष चाँद का टुकड़ा माँ की गोद के सुंदर, निष्कलुष और अत्यंत प्रिय शिशु को कहा गया है; उसकी मोहक सुंदरता चाँद जैसी लगती है।

त्वरित सुझाव: पहले शिशु की पहचान लिखें, फिर चाँद जैसी सुंदरता और माँ के प्रिय होने को तुलना का आधार बताएँ।

7(ख). माँ के लिए कविता में किस शब्द का प्रयोग हुआ है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शब्द-चयन से व्यक्त मातृत्व और वात्सल्य को संदर्भ में समझना है।
- गोद-भरी पद माँ की स्थिति के साथ उसके हृदय की प्रसन्नता का भी संकेत देता है।

चरण 1: प्रयुक्त शब्द बताएँ कविता में माँ के लिए गोद-भरी शब्द का प्रयोग हुआ है। वह अपने बच्चे को गोद में लेकर आँगन में खड़ी है और उसे हाथों पर झुला रही है। यह पद उसके बच्चे को गोद में लिए होने की स्थिति का सजीव चित्र उपस्थित करता है। इसी स्त्री को उसकी मातृत्वपूर्ण अवस्था के माध्यम से पहचाना गया है।

चरण 2: शब्द का भाव स्पष्ट करें गोद-भरी कहना केवल गोद में बच्चे के होने की सूचना देना नहीं है। इससे माँ का वात्सल्य, तृप्ति और उल्लास भी झलकता है। वह बच्चे को बार-बार उछालकर आनंदित करती है और उसकी हँसी से स्वयं भी आनंद पाती है। इस प्रकार शब्द माँ तथा शिशु के निकट संबंध और संतान को पाकर उसके मन में उमड़े स्नेह को मूर्त रूप देता है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ के लिए गोद-भरी शब्द आया है, क्योंकि उसकी गोद में शिशु है और उसका व्यक्तित्व मातृत्व के स्नेह तथा आनंद से भरा है।

त्वरित सुझाव: गोद-भरी शब्द को पहले उद्धृत करें; उसके बाद गोद में बच्चा होने और मातृत्व की तृप्ति के दोनों अर्थ खोलें।

7(ग). बच्चे की हँसी का कारण क्या है ? उसके गूँजने से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिशु की क्रिया और प्रतिक्रिया के संबंध से हँसी का कारण समझना है।
- गूँजना शब्द हँसी की ध्वनि तथा उससे वातावरण में फैलते आनंद को प्रकट करता है।

चरण 1: हँसी का कारण बताएँ माँ बच्चे को हाथों पर झुलाती है और रह-रहकर हवा में उछालती है। इस स्नेहपूर्ण खेल से बच्चे को आनंद और रोमांच मिलता है। माँ के हाथों में सुरक्षित होकर ऊपर उछलने और फिर उसकी गोद में आने का सुख उसे खिलखिलाकर हँसने को प्रेरित करता है। काव्यांश की लोका देती है वाली क्रिया इसी हर्षपूर्ण खेल को सामने लाती है।

चरण 2: गूँजने का आशय स्पष्ट करें बच्चे की हँसी का गूँजना बताता है कि उसकी खिलखिलाहट आँगन के वातावरण में फैल जाती है। वह क्षणिक मुसकान भर नहीं, खुलकर व्यक्त होने वाला निश्छल उल्लास है। उसकी हँसी से माँ और आसपास का परिवेश आनंदमय हो उठता है। इस ध्वनि-बिंब से कवि दृश्य को जीवंत बनाता है और माँ-बच्चे के आत्मीय संबंध का सुख पाठक तक पहुँचाता है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ के झुलाने और हवा में उछालने से बच्चा हँसता है। गूँजने का अर्थ उसकी खिलखिलाहट का आँगन में फैलकर वातावरण को आनंद से भर देना है।

त्वरित सुझाव: कारण के लिए माँ की उछालने की क्रिया और गूँजने के लिए पूरे आँगन में फैलती खिलखिलाहट लिखें।

7(घ). काव्यांश के भाव को अपने शब्दों में चित्रित कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-चित्रण में दृश्य, क्रिया और उनसे व्यक्त भावना को जोड़ना चाहिए।
- इस काव्यांश का केंद्रीय भाव माँ का वात्सल्य और शिशु का सहज आनंद है।

चरण 1: दृश्य का चित्र प्रस्तुत करें आँगन में एक माँ अपने चाँद जैसे सुंदर शिशु को गोद में लिए खड़ी है। वह उसे बड़े प्यार से हाथों पर झुलाती है। कभी वह उसे हल्के से हवा में उछालती है और फिर अपने हाथों में सँभाल लेती है। बच्चे को यह खेल बहुत अच्छा लगता है। वह आनंद से खिलखिलाकर हँस पड़ता है और उसकी हँसी पूरे आँगन में सुनाई देने लगती है।

चरण 2: दृश्य में निहित भाव खोलें इस छोटे-से घरेलू प्रसंग में माँ और शिशु की आत्मीय दुनिया सजीव हो उठती है। माँ की क्रियाओं में दुलार और ममता हैं, तो बच्चे की हँसी में निर्मल प्रसन्नता और माँ पर सहज विश्वास है। कवि ने कोई असाधारण घटना नहीं, दैनिक जीवन के एक मधुर क्षण को चुना है। इसी सामान्य दृश्य के माध्यम से मातृत्व की पूर्णता तथा बाल-जीवन के निष्कपट आनंद का सुंदर चित्र बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश माँ की गोद में झूलते और उछाले जाने पर खिलखिलाते शिशु का सजीव चित्र है; इसमें वात्सल्य और बाल-सुलभ आनंद की मधुर अभिव्यक्ति है।

त्वरित सुझाव: भाव-चित्र बनाते समय आँगन, माँ का झुलाना और बच्चे की हँसी को जोड़कर अंत में वात्सल्य व्यक्त करें।

---

8. प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भये वानर निकर
आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना मँह वीर रस
नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [6 अंक]

8(क). जिमि करुना मँह वीर रस – कथन का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- करुण रस शोक और व्याकुलता को, वीर रस साहस तथा उत्साह को अभिव्यक्त करता है।
- जिमि शब्द की तुलना से हनुमान के आगमन का प्रभाव स्पष्ट होता है।

चरण 1: करुण वातावरण पहचानें लक्ष्मण की मूर्च्छा से राम अत्यंत दुखी होकर विलाप कर रहे हैं। उनका प्रलाप सुनकर वानर-समूह भी व्याकुल हो जाता है। इस स्थिति में शोक, असहायता और चिंता का वातावरण है। प्रभु के दुख से पूरी सेना का दुखी हो उठना राम के प्रति उनके प्रेम को भी व्यक्त करता है। यही करुण रस की पृष्ठभूमि बनती है।

चरण 2: हनुमान के आगमन का सौंदर्य बताएँ ऐसे समय हनुमान का आना मानो करुण रस के बीच वीर रस का आ जाना है। उनके व्यक्तित्व से साहस, कार्यसिद्धि की आशा और उत्साह जुड़ा है। इसलिए उनका आगमन शोक में डूबी सेना को धैर्य और आश्वासन देता है। कवि ने व्यक्ति के प्रवेश की तुलना रस के प्रवेश से करके भाव-परिवर्तन को अत्यंत प्रभावशाली बना दिया है। करुणा के बीच वीरता का यह उभार ही कथन का विशेष सौंदर्य है।

चरण 3: निष्कर्ष हनुमान का आगमन शोकपूर्ण वातावरण में साहस, उत्साह और आशा जगाता है; इसीलिए उसे करुण रस में वीर रस के आगमन जैसा बताया गया है।

त्वरित सुझाव: तुलना खोलने के लिए पहले राम का शोक और फिर हनुमान से जागता उत्साह लिखें; यही दोनों रसों का संबंध है।

8(ख). काव्यांश में प्रयुक्त छन्द का नाम और लक्षण लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सोरठा चार चरणों वाला मात्रिक छंद है; मात्राएँ वर्णों की ध्वनि की अवधि से गिनी जाती हैं।
- इसके पहले और तीसरे चरण में 11 तथा दूसरे और चौथे चरण में 13 मात्राएँ होती हैं।

चरण 1: छंद का नाम और विन्यास बताएँ प्रस्तुत काव्यांश में सोरठा छंद प्रयुक्त हुआ है। यह मात्रिक छंद है और इसके चार चरण माने जाते हैं। पहली मुद्रित पंक्ति में पहले दो चरण तथा दूसरी पंक्ति में अगले दो चरण आते हैं। इसका मात्रा-विन्यास क्रमशः 11, 13, 11, 13 है। इस प्रकार प्रत्येक पंक्ति में कुल 24 मात्राएँ होती हैं और यति 11 तथा 13 मात्राओं पर पड़ती है।

चरण 2: तुक और पाठ से पहचान स्पष्ट करें सोरठे में पहले और तीसरे चरण के अंत में तुक मिलती है। यहाँ प्रभु प्रलाप सुनि कान और आइ गयउ हनुमान क्रमशः पहले और तीसरे चरण हैं; इनके कान तथा हनुमान शब्द तुक बनाते हैं। बिकल भये वानर निकर तथा जिमि करुना मँह वीर रस दूसरे और चौथे चरण हैं। सोरठे का मात्रा-क्रम दोहे के 13, 11 वाले क्रम से उलटा होता है; यही अंतर इसकी पहचान में सहायक है।

चरण 3: निष्कर्ष यह सोरठा छंद है: चार चरण, क्रमशः 11, 13, 11, 13 मात्राएँ तथा पहले और तीसरे चरण में तुक इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: सोरठे को दोहे से अलग रखने के लिए 11-13 का क्रम याद रखें और कान-हनुमान की तुक से पहचान पुष्ट करें।

8(ग). काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में समानता बताने के लिए जैसे, समान अथवा जिमि जैसे वाचक शब्द आते हैं।
- अनुप्रास में एक ही वर्ण की आवृत्ति से भाषा में ध्वनिगत सौंदर्य पैदा होता है।

चरण 1: उपमा की योजना स्पष्ट करें जिमि करुना मँह वीर रस में उपमा अलंकार है। शोकाकुल वानर-समूह के बीच हनुमान के आने की तुलना करुण रस के बीच वीर रस के आने से की गई है। जिमि उपमावाचक शब्द है। हनुमान के आगमन से उत्पन्न साहस और उत्साह को वीर रस के आगमन द्वारा समझाया गया है। इस तुलना में भावों का विरोध दृश्य के प्रभाव को और प्रखर बनाता है।

चरण 2: अनुप्रास और उसका प्रभाव बताएँ प्रभु प्रलाप में प वर्ण की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है। एक ही व्यंजन की पुनरावृत्ति से पदों में ध्वनिगत साम्य और प्रवाह आता है। कवि के इस शब्द-चयन से राम के विलाप का वर्णन श्रवण की दृष्टि से भी प्रभावशाली बनता है। इस प्रकार उपमा वातावरण के भाव-परिवर्तन को मूर्त करती है और अनुप्रास संक्षिप्त पंक्तियों को लय तथा श्रवण-माधुर्य देता है। दोनों अलंकार काव्य के भाव को उभारने में सहायक हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में जिमि करुना मँह वीर रस उपमा का और प्रभु प्रलाप अनुप्रास का स्पष्ट उदाहरण है; इनसे भाव की प्रभावशीलता और भाषा की लय बढ़ती है।

त्वरित सुझाव: जिमि को उपमावाचक शब्द और प्रभु प्रलाप में प को आवृत्त वर्ण बताकर दोनों अलंकारों के उदाहरण स्पष्ट करें।

अथवा

8. नभ में पाँती-बँधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखें ।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सचेत श्वेत काया ।
हौले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से ।
नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [6 अंक]

8(क). काव्यांश का भाव-सौन्दर्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौन्दर्य बताते समय दृश्य और उससे उत्पन्न अनुभूति का संबंध स्पष्ट किया जाता है।
- काले बादलों और सफेद बगुलों का रंग-विरोध प्राकृतिक दृश्य को विशेष आकर्षण देता है।

चरण 1: मोहक प्राकृतिक दृश्य काव्यांश में बादलों से ढके आकाश में पंक्तिबद्ध उड़ते बगुलों का अत्यंत सुंदर दृश्य है। कजरारे बादलों की पृष्ठभूमि में बगुलों के सफेद पंख और भी उज्ज्वल दिखाई देते हैं। उनकी उड़ती हुई पंक्ति कवि को ऐसी लगती है मानो संध्या की चेतन, श्वेत देह आकाश में तैर रही हो। इस प्रकार सामान्य दृश्य एक सजीव सौन्दर्यानुभूति बन गया है।

चरण 2: कवि की तन्मयता यह दृश्य कवि की दृष्टि को अपनी ओर खींच लेता है। आँखें चुरा लेने और अपनी माया में धीरे-धीरे बाँध लेने की अभिव्यक्तियाँ बताती हैं कि कवि उसके सम्मोहन से बच नहीं पाता। प्रकृति का यह सौन्दर्य केवल देखने की वस्तु नहीं रहता, बल्कि कवि के मन को अपने में लीन कर लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौन्दर्य श्यामल आकाश में उड़ते श्वेत बगुलों की मनोहर छवि और उससे उत्पन्न कवि की मुग्धता तथा आत्मविस्मृत तन्मयता में है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौन्दर्य में पहले दृश्य बताइए और फिर उस दृश्य का कवि के मन पर प्रभाव स्पष्ट कीजिए।

8(ख). भाषा-वैशिष्ट्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा-वैशिष्ट्य में शब्द-चयन, ध्वनि, लय और चित्रात्मक अभिव्यक्ति का विवेचन किया जाता है।
- उदाहरण उसी काव्यांश से लेने चाहिए जिसका विश्लेषण पूछा गया है।

चरण 1: शब्दावली और चित्रात्मकता काव्यांश की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और चित्रात्मक है। नभ, सचेत और श्वेत जैसे तत्सम शब्दों के साथ पाँती, कजरारे और हौले-हौले जैसे सहज लोकप्रचलित शब्द आए हैं। कजरारे बादल और श्वेत काया रंगों के माध्यम से आकाश का स्पष्ट दृश्य उपस्थित करते हैं। आँखें चुरा लेना और माया से बाँध लेना जैसी अभिव्यक्तियाँ भाषा को लाक्षणिक तथा प्रभावपूर्ण बनाती हैं।

चरण 2: ध्वनि और काव्यात्मक प्रयोग पाँती और पंख में प ध्वनि तथा छाई और छाया में छ ध्वनि की आवृत्ति से अनुप्रास का सौन्दर्य उत्पन्न होता है। हौले-हौले का द्विरुक्त प्रयोग उड़ान की मंद गति और कोमलता का अनुभव कराता है। संध्या को सचेत श्वेत काया के रूप में चित्रित करने से मानवीकरण आया है। स्वाभाविक लय इस मोहक दृश्य के भाव को और गहरा करती है।

चरण 3: निष्कर्ष सहज शब्दावली, चित्रात्मकता, लाक्षणिक प्रयोग, अनुप्रास, द्विरुक्ति और मानवीकरण इस काव्यांश की भाषा को सजीव तथा संगीतमय बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा की प्रत्येक विशेषता के साथ काव्यांश का छोटा उदाहरण दीजिए; केवल अलंकारों के नाम न लिखिए।

8(ग). काव्यांश के मानवीकरण का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जड़ अथवा अमानव सत्ता पर मानव के रूप, चेतना या व्यवहार का आरोप मानवीकरण कहलाता है।
- मानवीकरण की पहचान के साथ उसका भावात्मक प्रभाव भी स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: संध्या को चेतन रूप देना कवि ने बगुलों की श्वेत पंक्ति को तैरती साँझ की सचेत श्वेत काया कहा है। संध्या समय की एक अवस्था है, किंतु यहाँ उसे चेतना और शरीर से युक्त प्राणी की तरह प्रस्तुत किया गया है। बगुलों की गतिशील उजली पंक्ति उस संध्या की सजीव देह बन जाती है। इस कल्पना से आकाश का दृश्य अधिक कोमल और आकर्षक हो उठता है।

चरण 2: सौन्दर्य को सम्मोहक शक्ति देना आँखें चुरा लेने और कवि को अपनी माया से बाँध लेने का व्यवहार भी मानवीय है। प्राकृतिक दृश्य को ऐसी चेतन सत्ता बनाया गया है जो कवि का ध्यान खींचती और उसे अपने प्रभाव में ले लेती है। इससे कवि और प्रकृति के बीच आत्मीय संबंध बनता है तथा दृश्य के सम्मोहन का अनुभव पाठक तक पहुँचता है।

चरण 3: निष्कर्ष मानवीकरण द्वारा संध्या चेतन श्वेत देह और प्रकृति का सौन्दर्य सम्मोहित करने वाली शक्ति बन गया है; इससे दृश्य की सजीवता और कवि की मुग्धता स्पष्ट होती है।

त्वरित सुझाव: मानवीकरण समझाते समय अमानव सत्ता, उस पर आरोपित मानव-गुण और उससे उत्पन्न प्रभाव तीनों लिखिए।

9(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

'मुझसे मिलने को कौन विकल' पंक्ति से कवि की किस मानसिक स्थिति का पता चलता है ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्ति का आशय उसके प्रसंग और कवि की मनोदशा से जोड़कर स्पष्ट किया जाता है।
- प्रियजन की प्रतीक्षा का विश्वास मनुष्य को उत्साह देता है; उसका अभाव निराशा उत्पन्न करता है।

चरण 1: पंक्ति का प्रसंग एक गीत में पक्षी अपने बच्चों से मिलने के लिए तेजी से लौट रहे हैं। उनके बच्चों को उनकी प्रतीक्षा है और मिलने की उत्सुकता दोनों ओर है। इस स्नेहपूर्ण स्थिति को देखकर कवि अपनी दशा के विषय में सोचता है। वह प्रश्न करता है कि उससे मिलने के लिए कौन व्याकुल है। यह प्रश्न उसके जीवन में अपनत्व और प्रतीक्षा के अभाव की अनुभूति को व्यक्त करता है।

चरण 2: कवि की मानसिक स्थिति कवि को लगता है कि उसका कोई ऐसा प्रिय नहीं है जो उत्कंठा से उसकी राह देख रहा हो। इसलिए वह अकेलेपन, उदासी और भावनात्मक रिक्तता से भर उठता है। दूसरों के पारिवारिक स्नेह को देखकर उसका अपना अभाव और तीव्र हो जाता है। यह बाहरी रास्ते की कठिनाई नहीं, बल्कि मन में उठी स्नेहहीनता की पीड़ा है।

चरण 3: मनोदशा का प्रभाव मिलन की आशा पक्षियों की गति बढ़ाती है, किंतु कवि के पास वैसा आकर्षण नहीं है। फलतः उसके पग शिथिल पड़ जाते हैं और मन व्याकुल हो उठता है। जल्दी ढलते दिन का बोध उसके अकेलेपन को और गहरा करता है। इस प्रकार उक्त पंक्ति उसके निराश, एकाकी और प्रिय-मिलन की आशा से वंचित मन को सामने लाती है।

चरण 4: निष्कर्ष पंक्ति से कवि की एकाकी, उदास और निराश मनःस्थिति का पता चलता है। किसी प्रिय द्वारा प्रतीक्षा न किए जाने का विचार उसके उत्साह को घटाकर उसकी गति शिथिल कर देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पक्षियों की उत्सुक वापसी और कवि के शिथिल पगों का संबंध जोड़कर अकेलेपन का प्रभाव बताइए।

9(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

'परदे पर वक्त की कीमत होती है,' कथन से साक्षात्कार के प्रति कवि की किस मानसिकता का भान होता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में प्रस्तुत साक्षात्कारकर्ता की मानसिकता और उस पर कवि के व्यंग्य का भेद समझना आवश्यक है।
- व्यावसायिक मीडिया की संवेदनहीनता को उसके प्रश्नों और समय-संबंधी आग्रह से पहचाना जाता है।

चरण 1: कथन का संदर्भ कविता में साक्षात्कारकर्ता दिव्यांग व्यक्ति की पीड़ा को पर्दे पर उभारना चाहता है। वह उसके दुख को सहज रूप से समझने के बजाय उसे ऐसे ढंग से प्रस्तुत करना चाहता है कि दर्शक भावुक हों। पर्दे के समय की कीमत याद दिलाकर वह व्यक्ति से जल्दी अपनी पीड़ा प्रकट करवाना चाहता है। व्यक्ति की कठिनाई और भावनात्मक अवस्था के लिए उसके पास धैर्य नहीं है।

चरण 2: व्यावसायिक और असंवेदनशील दृष्टि इस कथन से कार्यक्रम बनाने वालों की व्यावसायिक मानसिकता उजागर होती है। उनके लिए प्रसारण का समय मूल्यवान है और उसी समय में प्रभावशाली दृश्य तैयार करना आवश्यक है। वे पीड़ित की गरिमा, संकोच और दुख से अधिक कार्यक्रम के आकर्षण को महत्त्व देते हैं। सहानुभूति का प्रदर्शन भी इस उद्देश्य की पूर्ति का साधन बन जाता है।

चरण 3: कवि की आलोचनात्मक मानसिकता कवि इस व्यवहार का समर्थन नहीं करता, बल्कि तीखे व्यंग्य के द्वारा उसकी संवेदनहीनता प्रकट करता है। साक्षात्कार सहायता या आत्मीय संवाद के स्थान पर दुख के प्रदर्शन का आयोजन बन जाता है। कवि चाहता है कि पाठक पर्दे पर दिखाई जाने वाली करुणा और उसके पीछे काम कर रहे व्यावसायिक स्वार्थ के अंतर को समझे।

चरण 4: निष्कर्ष इस कथन से साक्षात्कारकर्ताओं की समय और कार्यक्रम के लाभ को प्राथमिकता देने वाली असंवेदनशील मानसिकता प्रकट होती है। कवि का रुख इसके प्रति आलोचनात्मक और व्यंग्यपूर्ण है।

त्वरित सुझाव: कथन समझाते समय साक्षात्कारकर्ता की व्यावसायिक सोच और उसके प्रति कवि की आलोचना को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

9(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

कवि अपनी प्रेयसी को क्यों भूलना चाहता है ? 'सहर्ष स्वीकारा है' के आधार पर संक्षेप में लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में प्रिय का प्रभाव कवि के समूचे व्यक्तित्व और अनुभव-जगत में व्याप्त है।
- भूलने की इच्छा को प्रेम के अभाव की जगह उसके असह्य प्रभाव से मुक्ति की आकांक्षा के रूप में समझना चाहिए।

चरण 1: प्रेयसी का सर्वव्यापी प्रभाव कवि ने जीवन के सुख-दुख, संघर्ष, उपलब्धियाँ और सीमाएँ प्रेयसी से जुड़े होने के कारण सहर्ष स्वीकार की हैं। उसका स्नेह कवि के भीतर इतने गहरे तक समाया है कि वह अपने व्यक्तित्व और परिवेश में हर ओर उसी की छाया अनुभव करता है। इस प्रेम ने उसे बनाया भी है और उसके जीवन को अर्थ भी दिया है।

चरण 2: भूलने की इच्छा का कारण प्रेयसी का यह अत्यधिक स्नेह और उसके बिना जीवन की कल्पना न कर पाना कवि को अंततः असह्य लगता है। उसकी ममता की कोमलता भीतर पीड़ा बन जाती है। कवि को लगता है कि वह स्वतंत्र रूप से जीने और अपने अस्तित्व को सँभालने में असमर्थ हो रहा है। इसलिए वह इस गहरी भावात्मक निर्भरता और लगातार सताने वाली स्मृति से छुटकारा चाहता है।

चरण 3: विस्मरण की आकांक्षा का अंतर्विरोध कवि ऐसा अंधकार चाहता है जहाँ प्रिय की छवि दिखाई न दे और उसकी स्मृति से विश्राम मिल सके। किंतु प्रिय का प्रभाव इतना व्यापक है कि उससे पूरी तरह अलग होना सहज नहीं है। इसलिए भूलने की इच्छा में भी उसके गहरे प्रेम की स्वीकृति बनी रहती है। वह घृणा या उपेक्षा के कारण नहीं, प्रेम के असहनीय बोझ से कुछ मुक्ति पाने के लिए उसे भूलना चाहता है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि प्रेयसी को इसलिए भूलना चाहता है कि उसके सर्वव्यापी प्रेम और ममता ने उसे अत्यधिक भावनात्मक निर्भरता तथा पीड़ा से भर दिया है। यह विस्मरण प्रेम से उपजी व्याकुलता से मुक्ति की आकांक्षा है।

त्वरित सुझाव: प्रेयसी को भूलने का कारण लिखते समय प्रेम की तीव्रता और उससे उत्पन्न असह्य निर्भरता का संबंध अवश्य बताइए।

10. कुछ देर चुप रही जीजी, फिर मठरी मेरे मुँह में डालती हुई बोलीं – "देख बिना त्याग के दान नहीं होता । अगर तेरे पास लाखों करोड़ों रुपये हैं और उसमें से तू दो-चार रुपये किसी को दे दे तो यह क्या त्याग हुआ । त्याग तो वह होता है कि जो चीज़ तेरे पास भी कम है, जिसकी तुझको भी ज़रूरत है तो अपनी ज़रूरत को पीछे रख कर दूसरे के कल्याण के लिए उसे दे तो त्याग तो वह होता है, दान तो वह होता है, उसी का फल मिलता है ।"

"फल-वल कुछ नहीं मिलता सब ढकोसला है" मैंने कहा तो, पर कहीं मेरे तर्कों का किला पस्त होने लगा था । मगर मैं भी ज़िद्द पर अड़ा था ।

नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

10(क). जीजी और लेखक के बीच क्या समस्या थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी दान को त्याग तथा दूसरे के कल्याण से जोड़ती हैं। लेखक दान के फल को ढकोसला मानकर उसका विरोध करता है।
- यहाँ दान की बाहरी क्रिया के साथ उसकी भीतरी भावना पर भी ध्यान देना चाहिए। उत्तर में गद्यांश के कथन और उसके आशय का संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: जीजी का पक्ष जीजी के अनुसार दान तभी सार्थक है, जब व्यक्ति अपनी जरूरत पीछे रखकर दूसरे की सहायता करे। वे केवल धन की अधिकता से थोड़ा-सा दे देने को वास्तविक त्याग नहीं मानतीं। उनका विश्वास है कि जरूरत की वस्तु देने से किए गए त्याग का फल मिलता है।

चरण 2: लेखक का पक्ष लेखक जीजी की इस आस्था को स्वीकार नहीं कर पा रहा था। उसने कहा कि दान का कोई फल नहीं मिलता और ऐसी बातें ढकोसला हैं। इस प्रकार दोनों के बीच समस्या दान के महत्त्व और उसके फल को लेकर वैचारिक मतभेद की थी। जीजी के तर्क से प्रभावित होने पर भी लेखक अपनी जिद पर अड़ा था।

चरण 3: निष्कर्ष दान के महत्त्व तथा फल पर जीजी की आस्था और लेखक के अविश्वास के कारण दोनों में मतभेद था।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के मुख्य शब्दों को पहचानकर प्रश्न के कारण या आशय से जोड़ें और उत्तर को उसी प्रसंग तक सीमित रखें।

10(ख). त्याग के करने में जीजी के विचारों को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में त्याग का आधार अपनी आवश्यकता से ऊपर दूसरे का कल्याण रखना है।
- यहाँ दान की बाहरी क्रिया के साथ उसकी भीतरी भावना पर भी ध्यान देना चाहिए। उत्तर में गद्यांश के कथन और उसके आशय का संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: संपन्नता से दिए दान की सीमा जीजी कहती हैं कि जिसके पास लाखों-करोड़ों रुपये हों, उसका दो-चार रुपये दे देना वास्तविक त्याग नहीं है। इतनी छोटी राशि देने से उसे कोई अभाव नहीं सहना पड़ता और उसकी अपनी आवश्यकता भी प्रभावित नहीं होती। इसलिए केवल कुछ दे देने से त्याग की भावना सिद्ध नहीं होती।

चरण 2: सच्चे त्याग की पहचान सच्चा त्याग तब होता है जब व्यक्ति ऐसी वस्तु दूसरों को दे, जो उसके पास भी कम हो और जिसकी उसे स्वयं आवश्यकता हो। अपनी जरूरत पीछे रखकर दूसरे के कल्याण को प्राथमिकता देना इसका आवश्यक आधार है। जीजी के अनुसार इसी त्याग से युक्त दान का फल मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष अपनी जरूरत की वस्तु दूसरों के कल्याण के लिए देकर स्वयं अभाव सहना ही जीजी के अनुसार वास्तविक त्याग है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के मुख्य शब्दों को पहचानकर प्रश्न के कारण या आशय से जोड़ें और उत्तर को उसी प्रसंग तक सीमित रखें।

10(ग). लेखक ने ऐसा क्यों कहा कि उसके तर्कों का किला पस्त होने लगा था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तर्कों का किला पस्त होना अपने विरोधी तर्कों का प्रभाव कम होते अनुभव करना है।
- यहाँ दान की बाहरी क्रिया के साथ उसकी भीतरी भावना पर भी ध्यान देना चाहिए। उत्तर में गद्यांश के कथन और उसके आशय का संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: जीजी की व्याख्या का प्रभाव जीजी ने दान और त्याग का संबंध बहुत स्पष्ट ढंग से समझाया। उन्होंने अधिक धन में से थोड़ा देने और अपनी जरूरत की वस्तु दूसरे के लिए छोड़ने का अंतर बताया। इससे दान केवल कोई निरर्थक क्रिया न रहकर दूसरे के कल्याण के लिए किया गया त्याग दिखाई देने लगा।

चरण 2: लेखक की मनःस्थिति लेखक ऊपर से दान के फल को ढकोसला कहता रहा, किंतु भीतर से जीजी की बातों का प्रभाव अनुभव कर रहा था। उसे लगा कि उसका विरोध पहले जितना मजबूत नहीं रहा। फिर भी अपनी जिद के कारण वह इसे खुलकर स्वीकार नहीं कर सका। इसी आंतरिक कमजोरी को उसने तर्कों का किला पस्त होना कहा है।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी की त्यागपूर्ण दान की तर्कसंगत व्याख्या ने लेखक के विरोध को भीतर से कमजोर कर दिया था।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के मुख्य शब्दों को पहचानकर प्रश्न के कारण या आशय से जोड़ें और उत्तर को उसी प्रसंग तक सीमित रखें।

10(घ). जीजी के अनुसार दान के लिए महत्त्वपूर्ण क्या है ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी दान की मात्रा के स्थान पर त्याग और परोपकार की भावना को महत्त्व देती हैं।
- यहाँ दान की बाहरी क्रिया के साथ उसकी भीतरी भावना पर भी ध्यान देना चाहिए। उत्तर में गद्यांश के कथन और उसके आशय का संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: दान का आवश्यक आधार जीजी के अनुसार दान के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण त्याग है। व्यक्ति के पास कोई वस्तु कम हो और उसकी उसे स्वयं जरूरत भी हो, फिर भी वह अपनी जरूरत पीछे रखकर दूसरे को दे, तभी उसके देने में वास्तविक त्याग होता है।

चरण 2: त्याग के महत्त्व का कारण बहुत धन में से थोड़ी-सी राशि दे देने पर दाता को अभाव नहीं होता। इसके विपरीत अपनी आवश्यक वस्तु देने में व्यक्ति दूसरे के कल्याण को अपने सुख से ऊपर रखता है। यही निस्स्वार्थ भावना दान को सार्थक बनाती है। जीजी इसी कारण कहती हैं कि बिना त्याग के दान नहीं होता और त्याग से युक्त दान का ही फल मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष दान में त्याग महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि अपनी आवश्यकता छोड़कर दूसरे की भलाई करना ही उसे सच्चा दान बनाता है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के मुख्य शब्दों को पहचानकर प्रश्न के कारण या आशय से जोड़ें और उत्तर को उसी प्रसंग तक सीमित रखें।

अथवा

10. जाति प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए, तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है । कुशल व्यक्ति या सक्षम-श्रमिक समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपना पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके । इस सिद्धान्त के विपरीत जाति प्रथा का दूषित सिद्धान्त यह है कि इससे मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना, दूसरे ही दृष्टिकोण जैसे माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार, पहले से ही अर्थात् गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है ।

नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

10(क). 'गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है' – आशय स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश जाति के आधार पर वंशानुगत पेशा तय करने की व्यवस्था का विरोध करता है।
- उत्तर में गद्यांश के कथन और उसके आशय का संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: कथन का आशय इस कथन का आशय है कि जाति प्रथा में संतान का भावी पेशा उसके जन्म और उसकी रुचि-क्षमता सामने आने से पहले ही तय मान लिया जाता है। माता-पिता के सामाजिक स्तर और जातिगत पेशे के अनुसार उससे वही काम करने की अपेक्षा की जाती है।

चरण 2: व्यक्तिगत स्वतंत्रता की उपेक्षा ऐसी व्यवस्था में व्यक्ति का प्रशिक्षण, निजी योग्यता और अपना कार्य चुनने की इच्छा महत्त्वहीन हो जाती है। बच्चे की क्षमता विकसित होकर सामने आने की प्रतीक्षा भी नहीं की जाती। इसलिए गर्भधारण के समय से पेशा निर्धारित होना जन्म पर आधारित उस बंधन को व्यक्त करता है, जिसमें मनुष्य को स्वतंत्र चुनाव का अवसर नहीं मिलता।

चरण 3: निष्कर्ष जाति प्रथा में माता-पिता की जाति और सामाजिक स्थिति के आधार पर संतान का पेशा पहले से तय मान लिया जाता है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के मुख्य शब्दों को पहचानकर प्रश्न के कारण या आशय से जोड़ें और उत्तर को उसी प्रसंग तक सीमित रखें।

10(ख). जाति प्रथा स्वाभाविक श्रम विभाजन नहीं है, क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वाभाविक श्रम विभाजन व्यक्ति की रुचि और क्षमता से जुड़ा होना चाहिए।
- उत्तर में गद्यांश के कथन और उसके आशय का संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: स्वाभाविक विभाजन का आधार गद्यांश के अनुसार व्यक्ति को अपनी विकसित क्षमता और रुचि के आधार पर पेशा चुनने का अवसर मिलना चाहिए। ऐसा चुनाव उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं के अनुरूप होता है और उसे कुशल तथा सक्षम श्रमिक बनने में सहायता देता है।

चरण 2: जाति व्यवस्था का विपरीत आधार जाति प्रथा में कार्य का निर्धारण व्यक्ति की रुचि, प्रशिक्षण अथवा योग्यता से नहीं होता। माता-पिता के सामाजिक स्तर के आधार पर उसका पेशा पहले ही निश्चित कर दिया जाता है। इस प्रकार व्यक्ति की अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति और सामर्थ्य की उपेक्षा होती है। इसी कारण जाति प्रथा को स्वाभाविक श्रम विभाजन नहीं कहा जा सकता।

चरण 3: निष्कर्ष जाति प्रथा रुचि और योग्यता के स्थान पर जन्म तथा माता-पिता की सामाजिक स्थिति से पेशा तय करती है, इसलिए अस्वाभाविक है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के मुख्य शब्दों को पहचानकर प्रश्न के कारण या आशय से जोड़ें और उत्तर को उसी प्रसंग तक सीमित रखें।

10(ग). सक्षम एवं कुशल श्रमिक के लिए क्या-क्या आवश्यक है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- क्षमता का विकास और पेशे के स्वतंत्र चुनाव का अवसर कुशल श्रमिक के निर्माण के आधार हैं।
- उत्तर में गद्यांश के कथन और उसके आशय का संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: क्षमता का समुचित विकास सक्षम एवं कुशल श्रमिक तैयार करने के लिए व्यक्तियों की क्षमताओं को विकसित करना आवश्यक है। उनकी निजी योग्यता और प्रशिक्षण पर ध्यान दिया जाना चाहिए, जिससे वे काम करने की आवश्यक दक्षता प्राप्त कर सकें। जन्म या पारिवारिक स्थिति को योग्यता का विकल्प नहीं बनाया जाना चाहिए।

चरण 2: रुचि के अनुसार चुनाव की स्वतंत्रता क्षमता का विकास इस सीमा तक होना चाहिए कि व्यक्ति अपने पेशे अथवा कार्य का चुनाव स्वयं कर सके। उसकी रुचि और सामर्थ्य को चुनाव का आधार बनने देना आवश्यक है। पहले से थोपे गए जातिगत कार्य के स्थान पर ऐसा स्वतंत्र चुनाव ही सक्षम श्रमिक समाज के निर्माण में सहायक है।

चरण 3: निष्कर्ष कुशल श्रमिक के लिए क्षमता का विकास, उपयुक्त प्रशिक्षण और अपनी रुचि-योग्यता के अनुसार पेशा चुनने की स्वतंत्रता आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के मुख्य शब्दों को पहचानकर प्रश्न के कारण या आशय से जोड़ें और उत्तर को उसी प्रसंग तक सीमित रखें।

10(घ). जाति प्रथा के सिद्धान्त को दूषित क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्ति की क्षमता की उपेक्षा करके जन्म के आधार पर कार्य थोपना दूषित व्यवस्था है।
- उत्तर में गद्यांश के कथन और उसके आशय का संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: योग्यता और प्रशिक्षण की अवहेलना जाति प्रथा व्यक्ति के प्रशिक्षण और निजी क्षमता का विचार किए बिना उसका पेशा निर्धारित कर देती है। उसके भीतर किस कार्य की योग्यता है अथवा वह किस कार्य में कुशल हो सकता है, इन बातों को पेशे के निर्धारण का आधार नहीं बनाया जाता।

चरण 2: जन्म का अनुचित आधार इस व्यवस्था में माता-पिता का सामाजिक स्तर निर्णायक हो जाता है। संतान के जन्म से पहले ही उसके लिए वही पेशा मान लिया जाता है, जिससे उसके परिवार की जाति जुड़ी होती है। इससे व्यक्ति अपनी रुचि और विकसित क्षमता के अनुसार काम नहीं चुन पाता। स्वतंत्र चुनाव को रोकने और जन्म को योग्यता से ऊपर रखने के कारण इस सिद्धांत को दूषित कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष जाति प्रथा का सिद्धांत दूषित है, क्योंकि वह योग्यता और रुचि की उपेक्षा करके पारिवारिक सामाजिक स्थिति से पेशा तय करता है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के मुख्य शब्दों को पहचानकर प्रश्न के कारण या आशय से जोड़ें और उत्तर को उसी प्रसंग तक सीमित रखें।

11(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

शिरीष की तुलना किससे और क्यों की गई है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी ने शिरीष में विपरीत परिस्थितियों के बीच भी सहज, प्रसन्न और अनासक्त रहने की शक्ति देखी है।
- अवधूत वह साधक है जो सांसारिक बंधनों और सुख-दुःख के प्रभाव से मुक्त होकर मस्त रहता है।

चरण 1: तुलना का आधार शिरीष की तुलना एक अवधूत से की गई है। अवधूत संसार में रहकर भी उसके आकर्षणों और विकारों से ऊपर रहता है। उसी प्रकार शिरीष भीषण गर्मी, लू और तपते वातावरण से विचलित हुए बिना कोमल फूलों से लदा रहता है। जब अन्य वनस्पतियाँ झुलसने लगती हैं, तब उसका खिलना जीवन के प्रति अटूट आस्था प्रकट करता है।

चरण 2: अनासक्ति और मस्ती का अर्थ शिरीष की विशेषता परिस्थितियों से भागना नहीं, उनके बीच रहकर अपना स्वभाव बनाए रखना है। वह वायुमंडल से रस खींचकर सरसता और सौंदर्य बाँटता है; बाहरी कठोरता उसके भीतर की कोमलता नष्ट नहीं करती। अवधूत की तरह उसमें अनासक्ति, सहनशीलता और मस्ती है। इस तुलना के माध्यम से लेखक मनुष्य को भी संकट में धैर्य, जिजीविषा और प्रसन्नता बनाए रखने की प्रेरणा देता है। इसीलिए फूलों की कोमलता को दुर्बलता नहीं माना गया है। बाहर की तपन को सहते हुए सुंदर बने रहना आंतरिक शक्ति का प्रमाण है। शिरीष का उदाहरण बताता है कि जीवन का आनंद अनुकूल मौसम पर ही निर्भर नहीं होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष अतः शिरीष अवधूत के समान है, क्योंकि वह कठिन परिस्थितियों में भी निर्लिप्त, मस्त और सरस बना रहता है।

त्वरित सुझाव: तुलना बताते समय अवधूत का नाम लिखकर गर्मी में शिरीष के खिलने को उसके अनासक्त स्वभाव से जोड़िए।

11(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

खाली मन तथा भरी जेब से लेखक का क्या आशय है ? ये बातें बाज़ार को कैसे प्रभावित करती हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खरीदारी की सार्थकता आवश्यकता के स्पष्ट ज्ञान और विवेकपूर्ण चुनाव पर निर्भर है।
- खाली मन उद्देश्यहीनता का और भरी जेब पर्याप्त धन तथा खरीद सकने की सामर्थ्य का संकेत है।

चरण 1: दोनों अभिव्यक्तियों का आशय खाली मन से लेखक का आशय ऐसे मन से है जिसे अपनी वास्तविक जरूरत का स्पष्ट बोध नहीं है। वह किसी निश्चित वस्तु को लेने के उद्देश्य से बाजार नहीं जाता और आकर्षणों के सामने अस्थिर हो जाता है। भरी जेब का अर्थ है खरीदारी के लिए पर्याप्त पैसा होना। पैसा पास होने से व्यक्ति को लगता है कि वह अनेक चीजें खरीद सकता है, भले ही उनकी उसे आवश्यकता न हो।

चरण 2: बाज़ार के आकर्षण पर प्रभाव जब उद्देश्यहीन मन और धन की सुविधा एक साथ हों, तो बाजार का जादू अधिक असर करता है। सजावट, चमकती वस्तुएँ और विकल्प उसे लुभाते हैं; वह उपयोगिता के बजाय आकर्षण के वश होकर अनावश्यक सामान खरीद लेता है। इस प्रकार वह बाजार की तड़क-भड़क और अविवेकपूर्ण खपत को बढ़ावा देता है। इसके विपरीत जरूरत पहचानकर आने वाला ग्राहक केवल उपयोगी वस्तु चुनता है और बाजार को उसकी वास्तविक सार्थकता देता है। लेखक का संकेत यह भी है कि केवल जेब खाली होना संयम का प्रमाण नहीं है। असली संयम मन में आवश्यकताओं की पहचान से आता है; तभी धन रहते हुए भी ग्राहक बेकार वस्तुओं से बच सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष खाली मन और भरी जेब मनुष्य को बाजार के आकर्षण का आसान शिकार बनाते हैं; आवश्यकता का स्पष्ट ज्ञान इस प्रभाव को नियंत्रित करता है।

त्वरित सुझाव: खाली मन को धन की कमी मत समझिए; इसे खरीदारी के निश्चित उद्देश्य के अभाव से स्पष्ट कीजिए।

11(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

भक्तिन के स्वभाव की ऐसी दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण उसने लेखिका को अपने अनुसार ढाल लिया । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा की भक्तिन सेविका होकर भी स्वतंत्र व्यक्तित्व, दृढ़ विश्वास और अधिकारपूर्ण आत्मीयता रखती है।
- चरित्र की विशेषता को पाठ की घटना से जोड़ने पर स्पष्ट होता है कि उसका प्रभाव लेखिका के जीवन पर कैसे पड़ा।

चरण 1: दृढ़ निश्चय और अपने नियमों पर अडिग रहना भक्तिन की पहली विशेषता उसकी दृढ़ता और हठशीलता है। वह अपने खान-पान और रहन-सहन के नियम आसानी से नहीं बदलती। रसोई के संबंध में उसके अपने अनुशासन हैं और वह उन्हें महत्त्व देती है। लेखिका उसकी आदतों को पूरी तरह बदल नहीं सकीं; उलटे उन्हें भक्तिन के बनाए भोजन और उसके तौर-तरीकों को स्वीकार करना पड़ा। यह उसके व्यक्तित्व की अडिगता का उदाहरण है।

चरण 2: आत्मीय सेवा और अधिकारपूर्ण समर्पण दूसरी विशेषता उसका निष्ठापूर्ण सेवाभाव है। वह लेखिका की सुविधा, भोजन और देखभाल को अपना उत्तरदायित्व मानती है। उसका समर्पण केवल नौकरी निभाने तक सीमित नहीं; उसमें परिवारजन जैसी चिंता और अपनापन है। इसी आत्मीयता से वह लेखिका पर अपना अधिकार स्थापित कर लेती है। लेखिका उसकी सरल जीवन-शैली और सेवा से इतनी प्रभावित होती हैं कि उसकी अनेक सीमाओं को भी सहज रूप से स्वीकार कर लेती हैं। इस संबंध में भक्तिन का स्वाभिमान भी झलकता है; वह अपने व्यक्तित्व को मिटाकर सेवा नहीं करती, बल्कि अपने विश्वासों के साथ लेखिका के जीवन का अभिन्न अंग बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन की अडिग प्रकृति और आत्मीय, निष्ठापूर्ण सेवा ने लेखिका को उसके अनुसार ढाल लिया; सेविका और स्वामिनी का संबंध आत्मीय सहयोग में बदल गया।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताएँ अलग-अलग बताइए और प्रत्येक के साथ भोजन, रसोई या देखभाल का पाठ-संगत उदाहरण जोड़िए।

11(घ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

चार्ली चैप्लिन का भारतीयकरण किन-किन रूपों में पाया जाता है ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विष्णु खरे के पाठ में चार्ली का प्रभाव भारतीय सिनेमा में साधारण मनुष्य की करुणा और हास्य के मेल के रूप में दिखाई देता है।
- भारतीयकरण का अर्थ विदेशी कलाकार की नकल भर नहीं, उसकी कला को भारतीय जीवन और संवेदना के अनुकूल रूप देना है।

चरण 1: राज कपूर के पात्रों में प्रभाव चार्ली चैप्लिन का भारतीयकरण सबसे स्पष्ट राज कपूर की फिल्मों में दिखाई देता है। उनकी फिल्मों 'आवारा' और 'श्री 420' के साधारण, भोले तथा संघर्षशील नायक में चार्ली के आम आदमी की छवि मिलती है। सामाजिक विषमता और अभावों से जूझता यह पात्र अपनी सरलता, मानवीय संवेदना और हास्य से दर्शकों का मन जीतता है। उसका रूप भारतीय समाज की समस्याओं और अनुभवों के अनुरूप ढल जाता है।

चरण 2: हास्य और करुणा का भारतीय रूप भारतीय फिल्मों ने चार्ली की उस शैली को अपनाया जिसमें व्यक्ति अपनी कठिनाइयों, असहायता और हास्यास्पद स्थिति से दर्शक को हँसाता भी है और द्रवित भी करता है। यह प्रभाव केवल विदूषक तक सीमित नहीं रहता; नायक भी स्वयं पर हँस सकता है। इस प्रकार साधारण व्यक्ति के संघर्ष, अपमान और उम्मीद को हास्य-करुणा के साथ प्रस्तुत करने की शैली भारतीय सिनेमा का हिस्सा बनती है। चार्ली की सार्वभौम मानवीयता भारतीय पात्रों और परिवेश में नया रूप ग्रहण करती है।

चरण 3: निष्कर्ष चार्ली का भारतीयकरण राज कपूर के आम आदमी वाले पात्रों तथा भारतीय सिनेमा में हास्य और करुणा के संयुक्त चित्रण में मिलता है।

त्वरित सुझाव: केवल कलाकार का नाम न लिखिए; 'आवारा' और 'श्री 420' के पात्रों को साधारण मनुष्य के संघर्ष से जोड़िए।

11(ङ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जाति प्रथा को श्रम विभाजन का आधार क्यों नहीं माना जा सकता ? पाठ से उदाहरण देकर समझाइए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. आंबेडकर के अनुसार जाति-प्रथा केवल श्रम का विभाजन नहीं, श्रमिकों का ऊँच-नीच के स्तरों में विभाजन है।
- उचित श्रम-विभाजन व्यक्ति की रुचि, योग्यता और बदलती सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार काम चुनने की स्वतंत्रता देता है।

चरण 1: जन्म आधारित निर्धारण की समस्या जाति-प्रथा में व्यक्ति का पेशा उसकी अपनी क्षमता, रुचि या प्रशिक्षण देखकर तय नहीं किया जाता; जन्म से प्राप्त जाति और पूर्वजों के व्यवसाय के आधार पर निर्धारित कर दिया जाता है। इसलिए इसे स्वाभाविक और उपयोगी श्रम-विभाजन का आधार नहीं माना जा सकता। इसमें श्रमिकों के बीच ऊँच-नीच की स्थायी श्रेणियाँ बनती हैं और कुछ कार्यों को हीन मानने से उन्हें करने वालों के प्रति भी तिरस्कार पैदा होता है।

चरण 2: पाठ में पेशा बदलने की बाधा पाठ में बताया गया है कि उद्योग और तकनीक के परिवर्तन से पुराने पेशे अनुपयोगी हो सकते हैं और नए काम अपनाने की आवश्यकता पड़ती है। किंतु जाति-प्रथा व्यक्ति को अपने परंपरागत पेशे से बँधे रहने को विवश करती है। दूसरा पेशा अपनाने पर सामाजिक निषेध होने से व्यक्ति बेरोजगारी और अभाव सहने को बाध्य हो सकता है। अरुचिकर काम को विवश होकर करने से कार्यकुशलता भी घटती है। अतः यह व्यवस्था न व्यक्ति की स्वतंत्रता बढ़ाती है और न समाज की उत्पादकता।

चरण 3: निष्कर्ष जाति-प्रथा जन्म पर आधारित, श्रेणीबद्ध और कठोर व्यवस्था है; इसलिए वह रुचि, योग्यता और पेशा बदलने की स्वतंत्रता पर टिके उचित श्रम-विभाजन का आधार नहीं बन सकती।

त्वरित सुझाव: उत्तर में श्रम-विभाजन और श्रमिक-विभाजन का अंतर बताकर बदलते उद्योगों में पेशा बदलने की बाधा समझाइए।

12(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए :

'जूझ' के लेखक में स्वयं कविता रच सकने का आत्मविश्वास कैसे पैदा हुआ ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जूझ पाठ के प्रसंग के आधार पर कविता रचने का आत्मविश्वास को समझना आवश्यक है।
- उत्तर में पात्रों के आचरण और घटनाओं का कारण-परिणाम संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: शिक्षक की प्रेरणा लेखक के अध्यापक सौंदलगेकर कविता को तन्मय होकर, लय और भाव के साथ पढ़ाते थे। वे कवि के अनुभव, भाषा और अभिव्यक्ति की विशेषताएँ समझाते तथा अपनी रचनाएँ भी सुनाते थे। इस सजीव शिक्षण ने लेखक के भीतर कविता के प्रति गहरा आकर्षण पैदा किया। उसे अनुभव हुआ कि कविता केवल पुस्तकों की वस्तु नहीं, जीवन के परिचित अनुभवों की अभिव्यक्ति भी है।

चरण 2: स्वयं अभ्यास से विश्वास शिक्षक को निकट से देखकर लेखक को लगा कि वे भी उसके जैसे साधारण मनुष्य हैं; इसलिए वह भी कविता बना सकता है। खेत में काम करते और पशु चराते समय वह कविताएँ गुनगुनाने लगा, उनके ढंग पर नए शब्द जोड़कर अपनी रचनाएँ बनाने लगा। सौंदलगेकर उसकी रचनाएँ सुनते, त्रुटियाँ सुधारते और उत्साह बढ़ाते थे। इस अभ्यास और प्रोत्साहन से उसका संकोच दूर हुआ तथा स्वयं कविता रचने का आत्मविश्वास विकसित हुआ।

चरण 3: निष्कर्ष सौंदलगेकर का प्रभाव, कविता की सहजता का बोध और रचना का निरंतर अभ्यास लेखक के काव्य-आत्मविश्वास के आधार बने।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शिक्षक की प्रेरणा के साथ लेखक के अपने अभ्यास और प्रोत्साहन को अवश्य जोड़ें।

12(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए :

महाकुण्ड में अशुद्ध जल को रोकने की क्या व्यवस्था थी ? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अतीत में दबे पाँव पाठ के प्रसंग के आधार पर महाकुण्ड की जल-व्यवस्था को समझना आवश्यक है।
- उत्तर में पात्रों के आचरण और घटनाओं का कारण-परिणाम संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: बाहरी पानी को रोकना मोहनजोदड़ो का महाकुण्ड अत्यंत सावधानी से बनाया गया था। उसके तीन ओर साधुओं के लिए कक्ष थे और उत्तर में दो पाँतों में आठ स्नानघर थे। इन स्नानघरों के दरवाजे एक-दूसरे के सामने नहीं खुलते थे। उनकी बनावट तथा जल-निकासी का प्रबंध ऐसा था कि नहाने से निकला अशुद्ध पानी महाकुण्ड के स्वच्छ जल में न मिल सके।

चरण 2: निर्माण और निकासी की सावधानी कुण्ड की ईंटें बहुत सावधानी से जोड़ी गई थीं। चूने और चिरोड़ी के गारे का उपयोग किया गया था तथा दीवारों के पीछे डामर की परत लगाई गई थी। इससे बाहर का अशुद्ध पानी भीतर नहीं आ सकता था और भीतर का पानी रिस नहीं सकता था। कुण्ड में पानी पहुँचाने तथा प्रयुक्त पानी बाहर निकालने का अलग प्रबंध था। ये व्यवस्थाएँ उसकी स्वच्छता और उपयोगिता बनाए रखती थीं।

चरण 3: निष्कर्ष स्नानघरों की पृथक जल-निकासी और कुण्ड की जलरोधी, सुदृढ़ बनावट से अशुद्ध जल को महाकुण्ड में प्रवेश करने से रोका गया था।

त्वरित सुझाव: अशुद्ध जल को रोकने के प्रश्न में स्नानघरों की निकासी और कुण्ड की जलरोधी दीवारों का उल्लेख करें।

12(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए :

कार्यालय में अपने सहकर्मियों के साथ सेक्शन ऑफ़ीसर वाई.डी. पंत के व्यवहार पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सिल्वर वैडिंग पाठ के प्रसंग के आधार पर कार्यालय में यशोधर पंत का व्यवहार को समझना आवश्यक है।
- उत्तर में पात्रों के आचरण और घटनाओं का कारण-परिणाम संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: आत्मीय और मर्यादित संबंध सेक्शन ऑफ़ीसर वाई.डी. पंत का अपने सहकर्मियों के प्रति व्यवहार आत्मीय था। वे पद का अहंकार दिखाकर सबसे दूरी बनाए रखने के पक्ष में नहीं थे। कार्यालय के लोगों के साथ हल्की-फुल्की बातचीत तथा हँसी-मजाक में भाग लेते थे। उनकी सहजता में पुरानी पीढ़ी के संस्कार और दूसरों के प्रति अपनापन दिखाई देता है।

चरण 2: पुराने संस्कारों से उपजा अंतर सहकर्मियों की आधुनिक जीवनशैली और खर्च करने की प्रवृत्ति से वे पूरी तरह सहमत नहीं होते थे। अपनी विवाह-वर्षगाँठ पर कार्यालय में चाय-पानी के लिए धन देते समय भी उनके संयम और मितव्ययिता का परिचय मिलता है। वे आधुनिक ढंग की पार्टियों से सहज नहीं थे, किंतु साथियों का मन रखने और संबंधों की गर्माहट बचाने का प्रयास करते थे। इसलिए उनका व्यवहार मिलनसार होने के साथ परंपरानिष्ठ भी था।

चरण 3: निष्कर्ष कार्यालय में पंत आत्मीय, विनोदी और मर्यादित व्यक्ति थे; उनकी मितव्ययिता तथा पुराने संस्कारों के कारण नई पीढ़ी से कुछ मानसिक दूरी भी बनी रहती थी।

त्वरित सुझाव: चरित्र-टिप्पणी में आत्मीयता और परंपरागत सोच दोनों को कार्यालय के प्रसंग से स्पष्ट करें।

13(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

वाई.डी. पन्त की पत्नी पति की अपेक्षा सन्तान की ओर क्यों पक्षपाती दिखलाई पड़ती है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सिल्वर वैडिंग पाठ के प्रसंग के आधार पर पत्नी का बदलते समय के प्रति दृष्टिकोण को समझना आवश्यक है।
- उत्तर में पात्रों के आचरण और घटनाओं का कारण-परिणाम संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: संतान की आकांक्षाओं से सहमति यशोधर पंत की पत्नी बदलते समय के साथ जीवन में सुविधा और आधुनिकता अपनाना चाहती थीं। बच्चे भी नए ढंग से रहना, अच्छे कपड़े पहनना तथा सुख-सुविधाएँ जुटाना चाहते थे। उनकी इन इच्छाओं में माँ को स्वाभाविक उत्साह दिखाई देता था। इसीलिए बच्चों के निर्णयों और जीवनशैली के प्रति उनका रुख पति की अपेक्षा अधिक सहानुभूतिपूर्ण था।

चरण 2: पति के रूढ़ आग्रह से असहमति यशोधर बाबू अपने पुराने संस्कारों और किशनदा से मिले आदर्शों को बहुत महत्त्व देते थे। नई चीजों में उन्हें अक्सर कुछ अनुचित या असहज दिखाई देता था। पत्नी ने लंबे वैवाहिक जीवन में उनके संयम, सादगी और पुरानी मर्यादाओं के अनुसार जीवन बिताया था। अब बच्चों के समर्थ और बड़े हो जाने पर वे अपनी इच्छाओं को भी जगह देना चाहती थीं। पति का हर परिवर्तन पर संदेह करना उन्हें उचित नहीं लगता था।

चरण 3: पक्षपात का वास्तविक कारण बच्चों के साथ खड़े होने से पत्नी को परिवार की नई जीवनधारा में भाग लेने का अवसर मिलता था। वे पति से प्रेमहीन होने के कारण ऐसा नहीं करती थीं; उनकी पसंद और व्यवहार बदलते परिवेश के अनुकूल हो गए थे। पति अतीत के आदर्शों से जुड़े रहे, जबकि पत्नी बच्चों के वर्तमान और भविष्य को स्वीकार कर रही थीं। इसी दृष्टिकोण के अंतर से वे संतान की ओर पक्षपाती दिखाई देती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष पत्नी बच्चों की आधुनिक आकांक्षाओं में अपनी दबे रह गई इच्छाओं की पूर्ति और समय के साथ चलने का अवसर देखती थीं; इसलिए वे पति की अपेक्षा संतान का अधिक समर्थन करती थीं।

त्वरित सुझाव: पत्नी को केवल पक्षपाती न कहें; बदलता समय, उनकी इच्छाएँ और पति के पुराने आग्रहों का अंतर समझाएँ।

13(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

दत्ताराव ने लेखक की पढ़ाई की समस्या का समाधान किस प्रकार किया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जूझ पाठ के प्रसंग के आधार पर पढ़ाई जारी रखने में दत्ताराव की भूमिका को समझना आवश्यक है।
- उत्तर में पात्रों के आचरण और घटनाओं का कारण-परिणाम संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: समस्या की जड़ समझना लेखक पढ़ना चाहता था, पर उसके पिता उसे विद्यालय भेजने के बजाय खेती के काम में लगाए रखना चाहते थे। माँ और बेटे के समझाने पर भी पिता नहीं मानते थे। लेखक जानता था कि अकेले उसका आग्रह सफल नहीं होगा। इसलिए उसने माँ के साथ गाँव के प्रभावशाली और सम्मानित व्यक्ति दत्ताराव के सामने अपनी पढ़ाई की समस्या रखी।

चरण 2: पिता को समझाना और दबाव डालना दत्ताराव ने लेखक की पढ़ने की इच्छा को उचित माना और उसके पिता को बुलाकर समझाया। उन्होंने पढ़ाई बंद कराने पर नाराजगी प्रकट की और लड़के को विद्यालय भेजने के लिए कहा। पिता दत्ताराव की बात टालने का साहस नहीं कर सके। इस प्रकार दत्ताराव का सामाजिक प्रभाव तथा दृढ़ हस्तक्षेप उस बाधा को दूर करने में निर्णायक बना जिसे लेखक और उसकी माँ अकेले नहीं हटा पा रहे थे।

चरण 3: पढ़ाई का रास्ता खुलना दत्ताराव के हस्तक्षेप के बाद पिता ने शर्तों के साथ पढ़ने की अनुमति दी। लेखक को विद्यालय के समय के अतिरिक्त खेती का काम करना था और आवश्यक कृषि-कार्यों के समय पिता की सहायता करनी थी। लेखक ने पढ़ने का अवसर बचाने के लिए ये कठिन शर्तें स्वीकार कीं। इस व्यवस्था से उसकी शिक्षा फिर आरंभ हो सकी और उसके भीतर आगे बढ़ने की आशा जगी।

चरण 4: निष्कर्ष दत्ताराव ने पिता को अपने प्रभाव और दृढ़ समझाइश से राजी किया; परिणामस्वरूप लेखक को खेती के काम के साथ विद्यालय जाने की अनुमति मिली।

त्वरित सुझाव: घटनाक्रम में समस्या, दत्ताराव का हस्तक्षेप और पिता की शर्तों पर मिली अनुमति क्रम से लिखें।

13(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

ऐन फ्रेंक की डायरी के आधार पर नाज़ियों के अत्याचारों पर टिप्पणी कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डायरी के पन्ने पाठ के प्रसंग के आधार पर नाज़ी अत्याचार और यहूदी जीवन को समझना आवश्यक है।
- उत्तर में पात्रों के आचरण और घटनाओं का कारण-परिणाम संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: अधिकारों से वंचित करना ऐन फ्रेंक की डायरी नाज़ियों के अत्याचारों का मार्मिक दस्तावेज है। यहूदियों को सामान्य नागरिक जीवन से अलग कर दिया गया था। उन्हें पहचान के लिए पीला सितारा पहनना पड़ता था तथा उनके आवागमन, खरीदारी, शिक्षा और मनोरंजन पर अनेक प्रतिबंध लगा दिए गए थे। इन नियमों ने मनुष्य की स्वतंत्रता और गरिमा छीनकर उसे केवल उसकी जातीय पहचान के आधार पर अपमानित किया।

चरण 2: गिरफ्तारी और भय का वातावरण नाज़ी यहूदियों को पकड़कर यातना-शिविरों में भेज रहे थे। परिवार बिछड़ रहे थे और लोगों को अपने परिचितों की सुरक्षा की कोई निश्चित सूचना नहीं मिलती थी। ऐन तथा उसके परिवार को गिरफ्तारी से बचने के लिए गुप्त आवास में छिपना पड़ा। बाहर निकलने, सामान्य आवाज करने और स्वतंत्र जीवन जीने तक में खतरा था। दिन-रात पकड़े जाने की आशंका बनी रहती थी।

चरण 3: मानवीय जीवन पर दुष्प्रभाव इन अत्याचारों ने बच्चों से उनका स्वाभाविक बचपन, मित्रता और खुली दुनिया छीन ली। ऐन को अभाव, घुटन और अनिश्चित भविष्य के बीच रहना पड़ा। डायरी में व्यक्त उसका डर और पीड़ा स्पष्ट करते हैं कि नाज़ी शासन ने केवल शरीर पर हिंसा नहीं की, बल्कि मनुष्य की मानसिक शांति तथा भविष्य की आशा पर भी आघात किया। यह विवरण नस्ली घृणा और अमानवीय दमन का विरोध करता है।

चरण 4: निष्कर्ष डायरी से स्पष्ट होता है कि नाज़ियों ने यहूदियों पर प्रतिबंध, अपमान, गिरफ्तारी और यातना का आतंक फैलाया; इससे परिवारों का सामान्य जीवन और बच्चों का बचपन नष्ट हुआ।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रतिबंध, गिरफ्तारी का भय और ऐन के छिपे जीवन पर पड़े प्रभाव को अलग-अलग स्पष्ट करें।

---

14. सौंदलगेकर के व्यक्तित्व के आधार पर किसी अध्यापक के लिए आवश्यक जीवन-मूल्यों पर प्रकाश डालिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ 'जूझ' में सौंदलगेकर ऐसे शिक्षक हैं जो अपने विषय के ज्ञान के साथ विद्यार्थियों में संवेदना, आत्मविश्वास और सृजनशीलता जगाते हैं।
- अध्यापक का जीवन-मूल्य उसके आचरण और शिक्षण में प्रकट होता है। सहृदयता, विषय के प्रति निष्ठा, समान व्यवहार और प्रतिभा को प्रोत्साहन देना इस व्यक्तित्व के प्रमुख गुण हैं।

चरण 1: विषय-ज्ञान और शिक्षण के प्रति निष्ठा सौंदलगेकर मराठी पढ़ाते थे और कविता में उनकी गहरी रुचि थी। वे कविता को केवल शब्दार्थ बताकर समाप्त नहीं करते, बल्कि सस्वर गाकर और उसके भावों में डूबकर पढ़ाते थे। कविता का लयपूर्ण पाठ विद्यार्थियों को उसकी अनुभूति तक पहुँचाता था। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक को विषय का अच्छा ज्ञान होने के साथ उसे जीवंत ढंग से प्रस्तुत करने

की कला भी आनी चाहिए। अध्यापन के प्रति उत्साह विद्यार्थी में सीखने की इच्छा उत्पन्न करता है।

चरण 2: सहृदयता और विद्यार्थी की क्षमता में विश्वास लेखक साधारण ग्रामीण पृष्ठभूमि से आया था और खेती के काम के साथ पढ़ाई करता था। सौंदलगेकर की कक्षा ने उसके भीतर यह विश्वास पैदा किया कि कविता उसके जीवन से दूर की वस्तु नहीं है। शिक्षक का स्नेहपूर्ण और प्रेरक व्यवहार विद्यार्थियों की झिझक दूर करता है। इसलिए अच्छे अध्यापक को आर्थिक या सामाजिक स्थिति के आधार पर भेदभाव किए बिना प्रत्येक विद्यार्थी में छिपी संभावना पहचाननी चाहिए। प्रोत्साहन से साधारण दिखाई देने वाला बालक भी अपनी विशिष्ट क्षमता पहचान सकता है।

चरण 3: सृजनशीलता का विकास और व्यक्तिगत मार्गदर्शन सौंदलगेकर स्वयं भी कविताएँ रचते थे। उनके संपर्क में लेखक ने अनुभव किया कि परिचित प्रकृति, खेत और आसपास की वस्तुएँ भी कविता के विषय बन सकती हैं। लेखक की रचनाओं को सुनना, उनकी अच्छाइयों की प्रशंसा करना और आवश्यक सुधार बताना उनके शिक्षकीय दायित्व का हिस्सा था। इस प्रकार शिक्षक को विद्यार्थी की मौलिकता का सम्मान करते हुए उसे अभ्यास की दिशा देनी चाहिए। केवल तैयार उत्तर याद कराना पर्याप्त नहीं; विद्यार्थी को स्वयं अनुभव करने और अभिव्यक्त करने योग्य बनाना भी आवश्यक है।

चरण 4: जीवन में प्रेरणा देने वाला आदर्श सौंदलगेकर के व्यवहार और शिक्षण में एकरूपता थी। साहित्य के प्रति उनका अपना प्रेम लेखक तक पहुँचा और उसकी दिनचर्या में कविता के लिए जगह बनी। उनके व्यक्तित्व से यह जीवन-मूल्य उभरता है कि शिक्षक अपने आचरण से प्रेरणा दे, सीखने का आनंद बाँटे और विद्यार्थी को आत्मनिर्भर बनाए। ऐसे अध्यापक का प्रभाव परीक्षा की सफलता तक सीमित नहीं रहता; वह विद्यार्थी की रुचियों, आत्मबोध और भावी जीवन को दिशा देता है।

चरण 5: निष्कर्ष सौंदलगेकर के व्यक्तित्व से स्पष्ट है कि अध्यापक के लिए विषय-निष्ठा, सहृदयता, समानता, सृजनशीलता और प्रोत्साहनशील दृष्टि आवश्यक हैं। इन मूल्यों से वह विद्यार्थी में आत्मविश्वास जगाकर उसके व्यक्तित्व का विकास कर सकता है।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक जीवन-मूल्य के साथ सौंदलगेकर के शिक्षण का उदाहरण जोड़ें; केवल आदर्श अध्यापक के सामान्य गुण गिनाने से बचें।

अथवा

14. 'सिलवर वेडिंग' कहानी के पात्र किशन दा के उन जीवन-मूल्यों की चर्चा कीजिए जो यशोधर बाबू की सोच में आजीवन बने रहे। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिलवर वेडिंग' में किशन दा यशोधर बाबू के मार्गदर्शक हैं। उनके जीवन की सादगी, आत्मीयता और सामाजिक उत्तरदायित्व यशोधर बाबू के मूल्यों का आधार बनते हैं।
- यशोधर बाबू बदलते पारिवारिक परिवेश को बार-बार किशन दा से मिली दृष्टि की कसौटी पर परखते हैं। उनके मन में बसी यह छवि पीढ़ियों के बदलते जीवन-मूल्यों को भी स्पष्ट करती है।

चरण 1: आत्मीयता और परोपकार किशन दा पहाड़ से आने वाले युवकों के लिए दिल्ली में सहारा बनते थे। उनके यहाँ ऐसे युवकों को आश्रय और सहयोग मिलता था; यशोधर बाबू ने भी उनके सान्निध्य में जीवन सँभाला। वे दूसरों के काम आने और नए लोगों को अपने पैरों पर खड़ा करने को महत्त्व देते थे। इससे यशोधर बाबू ने सीखा कि व्यक्ति की उपलब्धि केवल उसकी निजी उन्नति में नहीं, बल्कि दूसरों को आगे बढ़ाने में भी है। परिचितों और जरूरतमंदों के प्रति अपनापन उनके लिए आजीवन महत्त्वपूर्ण रहा।

चरण 2: सादा जीवन और भौतिक दिखावे से दूरी किशन दा का जीवन सादगीपूर्ण था। बाहरी चमक और प्रतिष्ठा के प्रदर्शन की अपेक्षा वे मनुष्य के व्यवहार तथा उपयोगिता को अधिक महत्त्व देते थे। यशोधर बाबू के भीतर भी यही दृष्टि बनी रही। घर की बढ़ती आधुनिक सुविधाओं और उत्सव के प्रदर्शन से उनका सहज न हो पाना इसी संस्कार से जुड़ा है। विवाह की वर्षगाँठ को नए ढंग से मनाने पर उनकी असहजता बताती है कि वे संबंधों का मूल्य दिखावे से निर्धारित नहीं करते।

चरण 3: समुदाय, परंपरा और मानवीय संबंध किशन दा के यहाँ मेलजोल, सामूहिक आयोजन और पहाड़ी लोगों के बीच आत्मीय संबंधों

का महत्त्व था। यशोधर बाबू भी परिचितों से संपर्क, सामाजिक कर्तव्य और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव को आवश्यक समझते हैं। इसलिए उनके लिए व्यक्तिगत सुविधा से बढ़कर पुराने संबंधों का निर्वाह है। परिवार के सदस्य जिन बातों को समय और साधनों की बरबादी मान सकते हैं, उनमें वे अपनापन तथा सामाजिक जीवन की निरंतरता देखते हैं।

चरण 4: उत्तरदायित्व और जीवन की सार्थकता किशन दा की स्मृति विशेष रूप से अवकाश-प्राप्ति के बाद के जीवन को लेकर यशोधर बाबू को सोचने पर विवश करती है। नौकरी समाप्त होने पर व्यक्ति की सामाजिक भूमिका और उपयोगिता कैसे बनी रहे, यह उनके लिए गंभीर प्रश्न है। किशन दा के जीवन का अंतिम अकेलापन उन्हें मानवीय संबंधों और परिवार के महत्त्व का भी बोध कराता है। कठिन या असंगत लगने वाली स्थिति को किशन दा की तरह 'समहाउ इम्प्रॉपर' कहकर देखना दर्शाता है कि उनकी भाषा और मूल्य-दृष्टि तक यशोधर बाबू के व्यक्तित्व में बस गई थी।

चरण 5: निष्कर्ष किशन दा से मिले परोपकार, सादगी, आत्मीयता, सांस्कृतिक जुड़ाव और सामाजिक उत्तरदायित्व के मूल्य यशोधर बाबू की सोच में आजीवन बने रहे। वे आधुनिक जीवन की नई प्रवृत्तियों का मूल्यांकन इसी संस्कार के आधार पर करते हैं।

त्वरित सुझाव: किशन दा के जीवन-मूल्यों को यशोधर बाबू के व्यवहार से जोड़कर समझाएँ; दोनों पात्रों की केवल अलग-अलग विशेषताएँ लिखना पर्याप्त नहीं है।